नष्टणीड़ (charulata)

(Typeset in Unicode and Tex by
Lakshmi K. Raut
RautSoft Economics and Business Numerics
http://www2.hawaii.edu/~lakshmi

प्रथम परिच्छेद 2
द्वितीय परिच्छेद 9
तृतीय परिच्छेद 13
चतुर्थ परिच्छेद 16
पञ्चम परिच्छेद 20
षष्ठ परिच्छेद 22
सप्तम परिच्छेद 25
अष्टम परिच्छेद 29
नबम परिच्छेद 32
दशम परिच्छेद 35
एकादश परिच्छेद 38
द्वादश परिच्छेद 41
त्रयोदश परिच्छेद 44
चतुर्दश परिच्छेद 47
पञ्चदश परिच्छेद 49

प्रथम परिच्छेद

भूपतिर काज करिबार कोनो दरकार छिल ना। ताँहार टाका यथेष्ट छिल, एबं देशटाओ गरम। किन्तु ग्रहबशत तिनि काजेर लोक हइया जन्मग्रहण करियाछिलेन। एइजन्य ताँहाके एकटा इंरेजि खबरेर कागज बाहिर करिते हइल। इहार परे समयेर दीर्घतार जन्य ताँहाके आर बिलाप करिते हय़ नाइ।

छेलेबेला हइते ताँर इंरेजि खिबार एबं बक्तृता दिबार शख छिल। कोनोप्रकार प्रयोजन ना थाकिलेओ इंरेजि खबरेर कागजे तिनि चिठि लिखितेन, एबं बक्तब्य ना थाकिलेओ सभास्थले दु-कथा ना बलिया छाड़ितेन ना।

ताँहार मतो धनी लोकके दले पाइबार जन्य राष्टनैतिक दलपतिरा अजस्र स्तुतिबाद कराते निजेर इंरेजि रचनाशक्ति सम्बन्धे ताँहार धारणा यथेष्ट परिपुष्ट हइया उठिया़छिल।

अबशेषे ताँहार उकिल श्यालक उमापति ओकालति ब्यबसाय़ हतोद्यम हइया भगिनीपतिके कहिल, "भूपति, तुमि एकटा इंरेजि खबरेर कागज बाहिर करो। तोमार ये रकम असाधारण' इत्यादि।

भूपति उत्साहित हइया उठिल। परेर कागजे पत्र प्रकाश करिया गौरब नाइ, निजेर कागजे स्बाधीन कलमटाके पुरादमे छुटाइते पारिबे। श्यालकके सहकारी करिया नितान्त अल्प बय़सेइ भूपति सम्पादकेर गदिते आरोहण करिल।

अल्प बय़से सम्पादकि नेशा एबं राजनैतिक नेशा अत्यन्त जोर करिया धरे। भूपतिके माताइया तुलिबार लोकओ छिल अनेक।

एइरूपे से यतदिन कागज लइया भोर हइया छिल ततदिने ताहार बालिका बधू चारुलता धीरे धीरे यौबने पर्दापण करिल। खबरेर कागजेर सम्पादक एइ मस्त खबरटि भालो करिया टेर पाइल ना। भारत गबर्मेन्टेर सीमान्तनीति क्रमशइ स्फीत हइया संयमेर बन्धन बिदीर्ण करिबार दिके याइतेछे, इहाइ ताहार प्रधान लक्षेर बिषय़ छिल।

धनीगृहे चारुलतार कोनो कर्म छिल ना। फलपरिणामहीन फुलेर मतो परिपूर्ण अनाबश्यकतार मध्ये परिस्फुट हइया उठाइ ताहार चेष्टाशून्य दीर्घ दिनरात्रिर एकमात्र काज छिल। ताहार कोनो अभाब छिल ना।

एमन अबस्थार सुयोग पाइले बधू स्बामीके लइया अत्यन्त बाड़ाबाड़ि करिया थाके, दाम्पत्यलीलार सीमान्तनीति संसारेर समस्त सीमा लङ्घन करिया समय़ हइते असमय़े एबं बिहित हइते अबिहिते गिया उत्तीर्ण हय़। चारुलतार से सुयोग छिल ना। कागजेर आबरण भेद करिया स्बामीके अधिकार करा ताहार पक्षे दुरूह हइया़छिल।

युबती स्त्रीर प्रति मनोयोग आकर्षण करिया कोनो आत्मीया़ ताहाके भरत्सना करिले भूपति एकबार सचेतन हइया़ कहिल, "ताइ तो, चारुर एकजन केउ सङ्गिनी थाका उचित, ओ बेचारार किछुइ करिबार नाइ।"

श्यालक उमापतिके कहिल, "तोमार स्त्रीके आमादेर एखाने आनिया़ राखो-ना-- समबय़सि स्त्रीलोक केह काछे नाइ, चारुर निश्चय़इ भारि फाँका ठेके।"

स्त्रीसङ्गेर अभाबइ चारुर पक्षे अत्यन्त शोकाबह, सम्पादक एइरूप बुझिल एबं श्यालकजाया़ मन्दाकिनीके बाड़िते आनिया़ से निश्चिन्त हइल।

ये समय़े स्बामी स्त्री प्रेमोन्मेषेर प्रथम अरुणालोके परस्परेर काछे अपरूप महिमाय़ चिरनूतन बलिया़ प्रतिभात हय़, दाम्पत्येर सेइ स्बर्णप्रभामण्डित प्रत्युषकाल अचेतन अबस्थाय़ कखन अतीत हइया़ गेल केह जानिते पारिल ना। नूतनत्बेर स्बाद ना पाइय़ाइ उभय़े उभय़ेर काछे पुरातन परिचित अभ्यस्त हइया़ गेल।

लेखापड़ार दिके चारुलतार एकटा स्बाभाबिक झोँक छिल बलिया़ ताहार दिनगुला अत्यन्त बोझा हइया़ उठे नाइ। से निजेर चेष्टाय़ नाना कौशले पड़िबार बन्दोबस्त करिया़ लइया़छिल। भूपतिर पिसतुतो भाइ अमल थार्ड-इया़रे पड़िते़छिल, चारुलता ताहाके धरिया़ पड़ा करिया़ लइत; एइ कर्मटुकु आदाय़ करिया़ लइबार जन्य अमलेर अनेक आबदार ताहाके सह्य करिते हइत। ताहाके प्राय़इ होटेले खाइबार खोराकि एबं इंरेजि साहित्यग्रन्थ किनिबार खरचा जोगाइते हइत। अमल माझे माझे बन्धुदेर निमन्त्रण करिया़ खाओय़ाइत, सेइ यज्ञ-समाधार भार गुरुदक्षिणार स्बरूप चारुलता निजे ग्रहण करित। भूपति चारुलतार प्रति कोनो दाबि करित ना, किन्तु सामान्य एकटु पड़ाइया़ पिसतुतो भाइ अमलेर दाबिर अन्त छिल ना। ताहा लइया़ चारुलता प्राय़ माझे माझे कृत्रिम कोप एबं बिद्रोह प्रकाश करित; किन्तु कोनो एकटा लोकेर कोनो काजे आसा एबं स्नेहेर उपद्रब सह्य करा ताहार पक्षे अत्याबश्यक हइया़ उठिया़छिल।

अमल कहिल, "बोठान, आमादेर कलेजेर राजबाड़िर जामाइबाबु राजान्तःपुरेर खास हातेर बुननि कार्पेटेर जुतो परे आसे, आमार तो सह्य हय़ ना-- एकजोड़ा कार्पेटेर जुतो चाइ, नइले कोनोमतेइ पदमर्यादा रक्षा करते पारछि ने।"

चारु। हाँ, ताइ बैकि! आमि बसे बसे तोमार जुतो सेलाइ करे मरि। दाम दिच्छि, बाजार थेके किने आनो गे याओ।

अमल बलिल, "सेटि हच्छे ना।"

चारु जुता सेलाइ करिते जाने ना, एबं अमलेर काछे से कथा स्बीकार करितेओ चाहे ना। किन्तु ताहार काछे केह किछु चाय़ ना, अमल चाय़-- संसारे सेइ एकमात्र प्रार्थीर रक्षा ना करिय़ा से थाकिते पारे ना। अमल ये समय़कालेजे याइत सेइ समय़े से लुकाइय़ा बहु यत्ने कार्पेटेर सेलाइ शिखिते लागिल। एबं अमल निजे यखन ताहार जुतार दरबार सम्पूर्ण भुलिय़ा बसिय़ाछे एमन समय़ एकदिन सन्ध्याबेलाय़ चारु ताहाके निमन्त्रण करिल।

ग्रीष्मेर समय़ छादेर उपर आसन करिय़ा अमलेर आहारेर जाय़गा करा हइय़ाछे। बालि उड़िय़ा पड़िबार भय़े पितलेर ढाकनाय़ थाला ढाका रहिय़ाछे। अमल कालेजेर बेश परित्याग करिय़ा मुख धुइय़ा फिट्फाट्हइय़ा आसिय़ा उपस्थित हइल।

अमल आसने बसिय़ा ढाका खुलिल; देखिल, थालाय़ एकजोड़ा नूतन-बाँधानो पशमेर जुता साजानो रहिय़ाछे। चारुलता उच्चैःस्बरे हासिय़ा उठिल।

जुता पाइय़ा अमलेर आशा आरो बाड़िय़ा उठिल। एखन गलाबन्ध चाइ, रेशमेर रुमाले फुलकाटा पाड़ सेलाइ करिय़ा दिते हइबे, ताहार बाहिरेर घरे बसिबार बड़ो केदाराय़ तेलेर दाग निबारणेर जन्य एकटा काज-करा आबरण आबश्यक।

प्रत्येक बारेइ चारुलता आपत्ति प्रकाश करिय़ा कलह करे एबं प्रत्येक बारेइ बहु यत्ने ओ स्नेहे शौखिन अमलेर शख मिटाइय़ा देय़। अमल माझे माझे जिज्ञासा करे, "बउठान, कतदूर हइल।"

चारुलता मिथ्या करिय़ा बले, "किछुइ हय़ नि।" कखनो बले, "से आमार मनेइ छिल ना।"

किन्तु अमल छाड़िबार पात्र नय़। प्रतिदिन स्मरण कराइय़ा देय़ एबं आबदार करे। नाछोड़बान्दा अमलेर सेइ-सकल उपद्रब उद्रेक कराइय़ा दिबार जन्यइ चारु औदासीन्य प्रकाश करिय़ा बिरोधेर सृष्टि करे एबं हठात् एकदिन ताहार प्रार्थना पूरण करिय़ा दिय़ा कौतुक देखे।

धनीर संसारे चारुके आर काहारो जन्य किछु करिते हय़ ना, केबल अमल ताहाके काज ना कराइय़ा छाड़े ना। ए-सकल छोटोखाटो शखेर खाटुनितेइ ताहार हृदय़बृत्तिर चर्चा एबं चरितार्थता हइत।

भूपतिर अन्तःपुरे ये एकखण्ड जमि पड़िय़ा छिल ताहाके बागान बलिले अनेकटा अत्युक्ति करा हय़। सेइ बागानेर प्रधान बनस्पति छिल एकटा बिलाति आमड़ा गाछ।

एइ भूखण्डेर उन्नतिसाधनेर जन्य चारु एबं अमलेर मध्ये कमिटि बसिय़ाछे। उभय़े मिलिय़ा किछुदिन हइते छबि आँकिय़ा, प्लान करिय़ा, महा उत्साहे एइ जमिटार उपरे एकटा बागानेर कल्पना फलाओ करिय़ा तुलिय़ाछे।

अमल बलिल, "बउठान, आमादेर एइ बागाने सेकालेर राजकन्यार मतो तोमाके निजेर हाते गाछे जल दिते हबे।"

चारु कहिल, "आर ऐ पश्चिमेर कोनटाते एकटा कुँड़े तैरि करे निते हबे, हरिणेर बाच्छा थाकबे।"

अमल कहिल, "आर-एकटि छोटोखाटो झिलेर मतो करते हबे, ताते हाँस चरबे।"

चारु से प्रस्ताबे उत्साहित हइय़ा कहिल, "आर ताते नीलपद्म देब, आमार अनेकदिन थेके नीलपद्म देखबार साध आछे।"

अमल कहिल, " सेइ झिलेर उपर एकटि साँको बेँधे देओय़ा याबे, आर घाटे एकटि बेश छोटो डिङि थाकबे।"

चारु कहिल, "घाट अबश्य सादा मार्बेलेर हबे।"

अमल पेनसिल कागज लइय़ा रुल काटिय़ा कम्पास धरिय़ा महा आड़म्बरे बागानेर एकटा म्याप आँकिल।

उभय़े मिलिय़ा दिने दिने कल्पनार-संशोधन परिबर्तन करिते करिते बिश-पँचिशखाना नूतन म्याप आँका हइल।

म्याप खाड़ा हइले कत खरच हइते पारे ताहार एकटा एस्टिमेट तैरि हइते लागिल। प्रथमे संकल्प छिल-- चारु निजेर बराद्द मासहारा हइते क्रमे क्रमे बागान तैरि करिय़ा तुलिबे; भूपति तो

बाड़िते कोथाय़ की हइतेछे ताहा चाहिय़ा देखे ना; बागान तैरि हइले ताहाके सेखाने निमन्त्रण करिय़ा आश्चर्य करिय़ा दिबे; से मने करिबे, आलादिनेर प्रदीपेर साहाय्ये जापान देश हइते एकटा आस्त बागान तुलिय़ा आना हइय़ाछे।

किन्तु एस्टिमेट यथेष्ट कम करिय़ा धरिलेओ चारुर संगतिते कुलाय़ ना। अमल तखन पुनराय़ म्याप परिबर्तन करिते बसिल। कहिल, "ता हले बउठान, ऐ झिलटा बाद देओय़ा याक।"

चारु कहिल, "ना ना, झिल बाद दिले किछुतेइ चलिबे ना, ओते आमार नीलपद्म थाकबे।"

अमल कहिल, "तोमार हरिणेर घरे टालिर छाद नाइ दिले। ओटा अमनि एकटा सादासिधे खोड़ो चाल करलेइ हबे।"

चारु अत्यन्त राग करिय़ा कहिल, "ता हले आमार ओ घरे दरकार नेइ-- ओ थाक्।"

मरिशस हइते लबङ्ग, कर्नाट हइते चन्दन, एबं सिंहल हइते दारचिनिर चारा आनाइबार प्रस्ताब छिल, अमल ताहार परिबर्ते मानिकतला हइते साधारण दिशिओ बिलाति गाछेर नाम करितेइ चारु मुख भार करिय़ा बसिल; कहिल, "ता हले आमार बागाने काज नेइ।"

एस्टिमेट कमाइबार एरूप प्रथा नय़। एस्टिमेटेर सङ्गे सङ्गे कल्पनाके खर्ब करा चारुर पक्षे असाध्य एबं अमल मुखे याहाइ बलुक, मने मने ताहारओ सेटा रुचिकर नय़।

अमल कहिल, "तबे बउठान, तुमि दादार काछे बागानेर कथाटा पाड़ो; तिनि निश्चय़ टाका देबेन।"

चारु कहिल, "ना, ताँके बललले मजा की हल। आमरा दुजने बागान तैरि करे तुलब। तिनि तो साहेबबाड़िते फरमाश दिय़े इडेन गार्डेन बानिय़े दिते पारेन-- ता हले आमादेर प्लानेर की हबे।"

आमड़ा गाछेर छाय़ाय़ बसिय़ा चारु एबं अमल असाध्य संकल्पेर कल्पनासुख बिस्तार करितेछिल। चारुर भाज मन्दा दोतला हइते डाकिय़ा कहिल, "एत बेलाय़ बागाने तोरा की करछिस।"

चारु कहिल, "पाका आमड़ा खुँजछि।"

लुब्धा मन्दा कहिल, "पास यदि आमार जन्ये आनिस।"

चारु हासिल, अमल हासिल। ताहादेर संकल्पगुलिर प्रधान सुख एबं गौरब एइ छिल ये, सेगुलि ताहादेर दुजनेर मध्येइ आबद्ध। मन्दार आर या-किछु गुण थाक्, कल्पना छिल ना; से ए-सकल प्रस्ताबेर रस ग्रहण करिबे की करिय़ा। से एइ दुइ सभ्येर सकलप्रकार कमिटि हइते एकेबारे बर्जित।

असाध्य बागानेर एस्टिमेटओ कमिल ना, कल्पनाओ कोनो अंशे हार मानिते चाहिल ना। सुतरां आमड़ातलार कमिटि एइभाबेइ किछुदिन चलिल। बागानेर येखाने झिल हइबे, येखाने हरिणेर घर हइबे, येखाने पाथरेर बेदी हइबे, अमल सेखाने चिह्न काटिय़ा राखिल।

ताहादेर संकल्पित बागाने एइ आमड़ातलार चार दिक की भाबे बाँधाइते हइबे, अमल एकटि छोटो कोदाल लइय़ा ताहारइ दाग काटितेछिल-- एमन समय़ चारु गाछेर छाय़ाय़ बसिय़ा बलिल, "अमल, तुमि यदि लिखते पारते ता हले बेश हत।"

अमल जिज्ञासा करिल, "केन बेश हत।"

चारु। ता हले आमादेर एइ बागानेर बर्णना करे तोमाके दिय़े एकटा गल्प लेखातुम। एइ झिल, एइ हरिणेर घर, एइ आमड़ातला, समस्तइ ताते थाकतइड आमरा दुजने छाड़ा केउ बुझते पारत ना, बेश मजा हत। अमल, तुमि एकबार लेखबार चेष्टा करे देखो-ना, निश्चय़ तुमि पारबे।

अमल कहिल, "आच्छा, यदि लिखते पारि तो आमाके की देबे।"

चारु कहिल, "तुमि की चाओ।"

अमल कहिल, "आमार मशारिर चाले आमि निजे लता एँके देब, सेइटे तोमाके आगागोड़ा रेशम दिय़े काज करे दिते हबे।"

चारु कहिल, "तोमार समस्त बाड़ाबाड़ि। मशारिर चाले आबार काज!"

मशारि जिनिसटाके एकटा श्रीहीन कारागारेर मतो करिय़ा राखार बिरुद्धे अमल अनेक कथा बलिल। से कहिल, संसारेर पनेरोआना लोकेर ये सौन्दर्यबोध नाइ एबं कुश्रीता ताहादेर काछे किछुमात्र पीड़ाकर नहे इहाइ ताहार प्रमाण।

चारु से कथा तत्क्षणात् मने मने मानिय़ा लइल एबं "आमादेर एइ दुटि लोकेर निभृत कमिटि ये सेइ पनेरो-आनार अस्तर्गत नहे' इहा मने करिय़ा से खुशि हइल।

कहिल, "आच्छा बेश, आमि मशारिर चाल तैरि करे देब, तुमि लेखो।"

अमल रहस्यपूर्णभाबे कहिल, "तुमि मने कर, आमि लिखते पारि ने?"

चारु अत्यन्त उत्तेजित हइया कहिल, "तबे निश्चय तुमि किछु लिखेछ, आमाके देखाओ।"

अमल। आज थाक्, बउठान।

चारु। ना, आजइ देखाते हबे-- माथा खाओ, तोमार लेखा निये एसो गे।

चारुके ताहार लेखा शोनाइबार अतिब्यग्रतातेइ अमलके एतदिन बाधा दितेछिल। पाछे चारु ना बोझे, पाछे तार भालो ना लागे, ए संकोच से ताड़ाइते पारितेछिल ना।

आज खाता आनिया एकटुखानि लाल हइया, एकटुखानि काशिया, पड़िते आरम्भ करिल। चारु गाछेर गुड़ते हेलान दिया घासेर उपर पा छड़ाइया शुनिते लागिल।

प्रबन्धेर बिषयटा छिल "आमार खाता'। अमल लिखियाछिल-- "हे आमार शुभ्र खाता, आमार कल्पना एखनो तोमाके स्पर्श करे नाइ।

सूतिकागृहे भाग्यपुरुष प्रबेश करिबार पूर्बे शिशुर ललाटपट्टेर न्याय तुमि निर्मल, तुमि रहस्यमय। येदिन तोमार शेष पृष्ठार शेष छत्रे उपसंहार लिखिया दिब, सेदिन आज कोथाय! तोमार एइ शुभ्र शिशुपत्रगुलि सेइ चिरदिनेर जन्य मसीचिह्नित समाप्तिर कथा आज स्बप्नेओ कल्पना करितेछे ना।'-- इत्यादि अनेकखानि लिखियाछिल।

चारु तरुच्छायाय बसिया स्तब्ध हइया शुनिते लागिल। पड़ा शेष हइले क्षणकाल चुप करिया थाकिया कहिल, "तुमि आबार लिखते पार ना!"

सेदिन सेइ गाछेर तलाय अमल साहित्येर मादकरस प्रथम पान करिल; साकी छिल नबीना, रसनाओ छिल नबीन एबं अपराह्नेर आलोक दीर्घ छायापाते रहस्यमय हइया आसियाछिल।

चारु बलिल, "अमल, गोटाकतक आमड़ा पेड़े निये येते हबे, नइले मन्दाके की हिसेब देब।"

मूढ़ मन्दाके ताहादेर पड़ाशुना एबं आलोचनार कथा बलिते प्रबृत्तिइ हय ना, सुतरां आमड़ा पाड़िया लइया याइते हइल।

द्वितीय़ परिच्छेद

बागानेर संकल्प ताहादेर अन्यान्य अनेक संकल्पेर न्याय़ सीमाहीन कल्पनाक्षेत्रेर मध्ये कखन हाराइय़ा गेल ताहा अमल एबं चारु लक्षओ करिते पारिल ना।

एखन अमलेर लेखाइ ताहादेर आलोचना ओ परामर्शेर प्रधान बिषय़ हइय़ा उठिल। अमल आसिय़ा बले, "बोठान, एकटा बेश चमत्कार भाब माथाय़ एसेछे।"

चारु उत्साहित हइय़ा उठे; बले, "चलो, आमादेर दक्षिणेर बारान्दाय़-- एखाने एखनइ मन्दा पान साजते आसबे।"

चारु काश्मीरि बारान्दाय़ एकटि जीर्ण बेतेर केदाराय़ आसिय़ा बसे एबं अमल रेलिङेर निचेकार उच्च अंशेर उपर बसिय़ा पा छड़ाइय़ा देय़।

अमलेर लिखिबार बिषय़गुलि प्राय़इ सुनिर्दिष्ट नहे; ताहा परिष्कार करिय़ा बला शक्त। गोलमाल करिय़ा से याहा बलित ताहा स्पष्ट बुझा काहारो साध्य नहे। अमल निजेइ बारबार बलित, "बोठान, तोमाके भालो बोझाते पारछि ने।"

चारु बलित, "ना, आमि अनेकटा बुझते पेरेछि; तुमि एइटे लिखे फेलो, देरि कोरो ना।"

से खानिकटा बुझिय़ा, खानिकटा ना बुझिय़ा, अनेकटा कल्पना करिय़ा, अनेकटा अमलेर ब्यक्त करिबार आबेगेर द्वारा उत्तेजित हइय़ा, मनेर मध्ये की एकटा खाड़ा करिय़ा तुलित, ताहातेइ से सुख पाइत एबं आग्रहे अधीर हइय़ा उठित।

चारु सेइदिन बिकालेइ जिज्ञासा करित, "कतटा लिखले।"

अमल बलित, "एरइ मध्ये कि लेखा याय़।"

चारु परदिन सकाले ईषत् कलहेर स्बरे जिज्ञासा करित, "कइ, तुमि सेटा लिखले ना?"

अमल बलित, "रोसो, आर-एकटु भाबि।"

चारु राग करिय़ा बलित, "तबे याओ।"

बिकाले सेइ राग घनीभूत हइय़ा चारु यखन कथा बन्ध करिबार जो करित तखन अमल लेखा कागजेर एकटा अंश रुमाल बाहिर करिबार छले पकेट हइते एकटुखानि बाहिर करित।

मुहूर्ते चारुर मौन भाङिया गिया से बलिया उठित, "ऐ-ये तुमि लिखेछ! आमाके फाँकि! देखाओ।"

अमल बलित, "एखनो शेष हय़ नि, आर-एकटु लिखे शोनाब।"

चारु। ना, एखनइ शोनाते हबे।

अमल एखनइ शोनाइबार जन्यइ ब्यस्त; किन्तु चारुके किछुक्षण काड़ाकाड़ि ना कराइय़ा से शोनाइत ना। तार परे अमल कागजखानि हाते करिय़ा बसिय़ा प्रथमटा एकटुखानि पाता ठिक करिय़ा लइत, पेनसिल लइय़ा दुइ-एक जाय़गाय़ दुटो-एकटा संशोधन करिते थाकित, ततक्षण चारुर चित्त पुलकित कौतूहले जलभारनत मेघेर मतो सेइ कागज कय़खानिर दिके झुँकिय़ा रहित।

अमल दुइ-चारि प्याराग्राफ यखन याहा लेखे ताहा यतटुकुइ होक चारुके सद्य सद्य शोनाइते हय़। बाकि अलिखित अंशटुकु आलोचना एबं कल्पनाय़ उभय़ेर मध्ये मथित हइते थाके।

एतदिन दुजने आकाशकुसुमेर चय़ने नियुक्त छिल, एखन काब्यकुसुमेर चाष आरम्भ हइय़ा उभय़े आर-समस्तइ भुलिय़ा गेल।

एकदिन अपराह्ने अमल कालेज हइते फिरिले ताहार पकेटटा किछु अतिरिक्त भरा बलिय़ा बोध हइल। अमल यखन बाड़िते प्रबेश करिल तखनइ चारु अन्तःपुरेर गबाक्ष हइते ताहार पकेटेर पूर्णतार प्रति लक्ष करिय़ाछिल।

अमल अन्यदिन कालेज हइते फिरिय़ा बाड़िर भितरे आसिते देरि करित ना; आज से ताहार भरा पकेट लइय़ा बाहिरेर घरे प्रबेश करिल, शीघ्र आसिबार नाम करिल ना।

चारु अन्तःपुरेर सीमान्तदेशे आसिय़ा अनेकबार तालि दिल, केह शुनिल ना। चारु किछु राग करिय़ा ताहार बारान्दाय़ मन्मथ दत्तर एक बइ हाते करिय़ा पड़िबार चेष्टा करिते लागिल।

मन्मथ दत्त नूतन ग्रन्थकार। ताहार लेखार धरन अनेकटा अमलेरइ मतो, एइजन्य अमल ताहाके कखनो प्रशंसा करित ना; माझे माझे चारुर काछे ताहार लेखा बिकृत उच्चारणे पड़िय़ा बिद्रूप करित-- चारु अमलेर निकट हइते से बइ काड़िय़ा लइय़ा अबज्ञाभरे दूरे फेलिय़ा दित।

आज यखन अमलेर पदशब्द शुनिते पाइल तखन सेइ मन्मथ दत्तर "कलकण्ठ'-नामक बइ मुखेर काछे तुलिय़ा धरिय़ा चारु अत्यन्त एकाग्रभाबे पड़िते आरम्भ करिल।

अमल बारान्दाय़ प्रबेश करिल, चारु लक्षओ करिल ना। अमल कहिल, "की बोठान, की पड़ा हच्छे।"

चारुके निरुत्तर देखिय़ा अमल चौकिर पिछने आसिय़ा बइटा देखिल।

कहिल, "मन्मथ दत्तेर गलगण्ड।"

चारु कहिल, "आः, बिरक्त कोरो ना, आमाके पड़ते दाओ।" पिठेर काछे दाँड़ाइय़ा अमल ब्यङ्गस्बरे पड़िते लागिल, "आमि तृण, क्षुद्र तृण; भाइ रक्ताम्बर राजबेशधारी अशोक, आमि तृणमात्र! आमार फुल नाइ, आमार छाय़ा नाइ, आमार मस्तक आमि आकाशे तुलिते पारि ना, बसन्तेर कोकिल आमाके आश्रय़ करिय़ा कुहुस्बरे जगत् माताय़ ना -- तबु भाइ अशोक, तोमार ऐ पुष्पित उच्च शाखा हइते तुमि आमाके उपेक्षा करिय़ो ना; तोमार पाय़े पड़िय़ा आछि आमि तृण, तबु आमाके तुच्छ करिय़ो ना।"

अमल एइटुकु बइ हइते पड़िय़ा तार परे बिद्रूप करिय़ा बानाइय़ा बलिते लागिल, "आमि कलार काँदि, काँचकलार काँदि, भाइ कुष्माण्ड, भाइ गृहचालबिहारी कुष्माण्ड, आमि नितान्तइ काँचकलार काँदि।"

चारु कौतूहलेर ताड़नाय़ राग राखिते पारिल ना; हासिय़ा उठिय़ा बइ फेलिय़ा दिय़ा कहिल, "तुमि भारि हिंसुटे, निजेर लेखा छाड़ा किछु पछन्द हय़ ना।"

अमल कहिल, "तोमार भारि उदारता, तृणटि पेलेओ गिले खेते चाओ।"

चारु। आच्छा मशाय़, ठाट्टा करते हबे ना-- पकेटे की आछे बेर करे फेलो।

अमल। की आछे आन्दाज करो।

अनेकक्षण चारुके बिरक्त करिय़ा अमल पकेट हइते "सरोरुह'-नामक बिख्यात मासिक पत्र बाहिर करिल।

चारु देखिल, कागजे अमलेर सेइ "खाता'-नामक प्रबन्धटि बाहिर हइय़ाछे।

चारु देखिय़ा चुप करिय़ा रहिल। अमल मने करिय़ाछिल, ताहार बोठान खुबखुशि हइबे। किन्तु खुशिर बिशेष कोनो लक्षण ना देखिय़ा बलिल, "सरोरुह पत्रे ये-से लेखा बेर हय़ ना।"

अमल एटा किछु बेशि बलिल। ये-कोनोप्रकार चलनसइ लेखा पाइले सम्पादक छाड़ेन ना। किन्तु अमल चारुके बुझाइय़ा दिल, सम्पादक बड़ै कड़ा लोक, एकशो प्रबन्धेर मध्ये एकटा बाछिय़ा लन।

शुनिय़ा चारु खुशि हइबार चेष्टा करिते लागिल किन्तु खुशि हइते पारिल ना। किसे ये से मनेर मध्ये आघात पाइल ताहा बुझिय़ा देखिबार चेष्टा करिल; कोनो संगत कारण बाहिर हइल ना।

अमलेर लेखा अमल एबं चारु दुजनेर सम्पत्ति। अमल लेखक एबं चारु पाठक। ताहार गोपनताइ ताहार प्रधान रस। सेइ लेखा सकले पड़िबे एबं अनेकेइ प्रशंसा करिबे, इहाते चारुके ये केन एतटा पीड़ा दितेछिल ताहा से भालो करिय़ा बुझिल ना।

किन्तु लेखकेर आकाङक्षा एकटिमात्र पाठके अधिकदिन मेटे ना। अमल ताहार लेखा छापाइते आरम्भ करिल। प्रशंसाओ पाइल।

माझे माझे भक्तेर चिठिओ आसिते लागिल। अमल सेगुलि ताहार बोठानके देखाइत। चारु ताहाते खुशिओ हइल, कष्टओ पाइल। एखन अमलके लेखाय़ प्रबृत्त कराइबार जन्य एकमात्र ताहारइ उत्साह ओ उत्तेजनार प्रय़ोजन रहिल ना। अमल माझे माझे कदाचित् नामस्बाक्षरबिहीन रमणीर चिठिओ पाइते लागिल। ताहा लइय़ा चारु ताहाके ठाट्टा करित किन्तु सुख पाइत ना। हठात् ताहादेर कमिटिर रुद्ध द्वार खुलिय़ा बांलादेशेर पाठकमण्डली ताहादेर दुजनकार माझखाने आसिय़ा दाँड़ाइल।

भूपति एकदिन अबसरकाले कहिल, "ताइ तो चारु, आमादेर अमल ये एमन भालो लिखते पारे ता तो आमि जानतुम ना।"

भूपतिर प्रशंसाय़ चारु खुशि हइल। अमल भूपतिर आश्रित, किन्तु अन्य आश्रितदेर सहित ताहार अनेक प्रभेद आछे ए कथा ताहार स्बामी बुझिते पारिले चारु येन गर्ब अनुभब करे। ताहार भाबटा एइ ये "अमलके केन ये आमि एतटा स्नेह आदर करि एतदिने तोमरा ताहा बुझिले; आमि अनेकदिन आगेइ अमलेर मर्यादा बुझिय़ाछिलाम, अमल काहारो अबज्ञार पात्र नहे।'

चारु जिज्ञासा करिल, "तुमि तार लेखा पड़ेछ?"

भूपति कहिल, "हाँ-- ना ठिक पड़ि नि। समय़ पाइ नि। किन्तु आमादेर निशिकान्तप'ड़े खुब प्रशंसा करछिल। से बांला लेखा बेश बोझे।"

भूपतिर मने अमलेर प्रति एकटि सम्मानेर भाब जागिय़ा उठे, इहा चारुर एकान्त इच्छा।

तृतीय़ परिच्छेद

उमापद भूपतिके ताहार कागजेर सङ्गे अन्य पाँचरकम उपहार दिबार कथा बुझाइतेछिल। उपहार ये की करिय़ा लोकसान काटाइय़ा लाभ हइते पारे ताहा भूपति किछुतेइ बुझिते पारितेछिल ना।

चारु एकबार घरेर मध्ये प्रबेश करिय़ाइ उमापदके देखिय़ा चलिय़ा गेल। आबार किछुक्षण घुरिय़ा फिरिय़ा घरे आसिय़ा देखिल, दुइजने हिसाब लइय़ा तर्के प्रबृत्त।

उमापद चारुर अधैर्य देखिय़ा कोनो छुता करिय़ा बाहिर हइय़ा गेल। भूपति हिसाब लइय़ा माथा घुराइते लागिल।

चारु घरे ढुकिय़ा बलिल, "एखनो बुझि तोमार काज शेष हइल ना। दिनरात ऐ एकखाना कागज निय़े ये तोमार की करे काटे, आमि ताइ भाबि।"

भूपति हिसाब सराइय़ा राखिय़ा एकटुखानि हासिल। मने मने भाबिल, "बास्तबिक चारुर प्रति आमि मनोयोग दिबार समय़इ पाइ ना, बड़ो अन्याय़। ओ बेचारार पक्षे समय़ काटाइबार किछुइ नाइ।'

भूपति स्नेहपूर्णस्बरे कहिल, "आज ये तोमार पड़ा नेइ! मास्टारटि बुझि पालिय़ेछेन? तोमार पाठशालार सब उलटो निय़म-- छात्रीटि पुँथिपत्र निय़े प्रस्तुत, मास्टार पलातक! आजकाल अमल तोमाके आगेकार मतो निय़मित पड़ाय़ बले तो बोध हय़ ना।"

चारु कहिल, "आमाके पड़िय़े अमलेर समय़ नष्ट करा कि उचित। अमलके तुमि बुझि एकजन सामान्य टिउटर पेय़েछ?"

भूपति चारुर कटिदेश धरिय़ा काछे टानिय़ा कहिल, "एटा कि सामान्य प्राइभेट टिउटारि हल। तोमार मतो बउठानके यदि पड़ाते पेतुम ता हले-- "

चारु। इस्इस्, तुमि आर बोलो ना। स्बामी हय़ेइ रक्षे नेइ तो आरो किछु!

भूपति ईषत् एकटु आहत हइय़ा कहिल, "आच्छा, काल थेके आमि निश्चय़ तोमाके पड़ाब। तोमार बइगुलो आनो देखि, की तुमि पड़ एकबार देखे निइ।"

चारु। ढेर हय़ेछे, तोमार आर पड़ाते हबे ना। एखनकार मतो तोमार खबरेर कागजेर हिसाबटा एकटु राखबे! एखन आर-कोनो दिके मन दिते पारबे कि ना बलो।

भूपति कहिल, "निश्चय़ पारब। एखन तुमि आमार मनके ये दिके फेराते चाओ सेइ दिकेइ फिरबे।"

चारु। आच्छा बेश, ता हले अमलेर एइ लेखाटा एकबार पड़े देखो केमन चमत्कार हय़ेछे। सम्पादक अमलके लिखेछे, एइ लेखा पड़े नबगोपालबाबु ताके बांलार रास्किन नाम दिय़ेछेन।

शुनिय़ा भूपति किछु संकुचितभाबे कागजखाना हाते करिय़ा लइल। खुलिय़ा देखिल, लेखाटिर नाम "आषाढ़ेर चाँद'। गत दुइ सप्ताह धरिय़ा भूपति भारत गबर्मेन्टेर बाजेट-समालोचना लइय़ा बड़ो बड़ो अङ्कपात करितेछिल, सेइ-सकल अङ्क बहुपद कीटेर मतो ताहार मस्तिष्केर नाना बिबरेर मध्ये सञ्चरण करिय़ा फिरितेछिल-- एमन समय़ हठात् बांला भाषाय़ "आषाढ़ेर चाँद' प्रबन्ध आगागोड़ा पड़िबार जन्य ताहार मन प्रस्तुत छिल ना। प्रबन्धटि नितान्त छोटो नहे।

लेखाटा एइरूपे शुरु हइय़ाछे-- "आज केन आषाढ़ेर चाँद सारा रात मेघेर मध्ये एमन करिय़ा लुकाइय़ा बेड़ाइतेछे। येन स्बर्गलोक हइते से की चुरि करिय़ा आनिय़ाछे, येन ताहार कलङ्क ढाकिबार स्थान नाइ। फाल्गुन मासे यखन आकाशेर एकटि कोणेओ मुष्टिपरिमाण मेघ छिल ना तखन तो जगतेर चक्षेर सम्मुखे से निर्लज्जेर मतो उन्मुक्त आकाशे आपनाके प्रकाश करिय़ाछिल-- आर आज ताहार सेइ ढलढल हासिखानि-- शिशुर स्बप्नेर मतो, प्रिय़ार स्मृतिर मतो, सुरेश्बरी शचीर अलकबिलम्बित मुक्तार मालार मतो--'

भूपति माथा चुलकाइय़ा कहिल, "बेश लिखेछे। किन्तु आमाके केन। ए-सब कबित्ब कि आमि बुझि।"

चारु संकुचित हइय़ा भूपतिर हात हइते कागजखाना काड़िय़ा कहिल, "तुमि तबे की बोझे।"

भूपति कहिल, "आमि संसारेर लोक, आमि मानुष बुझि।"

चारु कहिल, "मानुषेर कथा बुझि साहित्येर मध्ये लेखे ना?"

भूपति। भुल लेखे। ता छाड़ा मानुष यखन सशरीरे बर्तमान तखन बानानो कथार मध्ये ताके खुँजे बेड़ाबार दरकार?

बलिय़ा चारुलतार चिबुक धरिय़ा कहिल, "एइ येमन आमि तोमाके बुझि, किन्तु सेजन्य कि "मेघनादबध' "कबिकङ्कण चण्डी' आगागोड़ा पड़ार दरकार आछे।"

भूपति काब्य बोझे ना बलिय़ा अहंकार करित। तबु अमलेर लेखा भालो करिय़ा ना पड़िय़ाओ ताहार प्रति मने मने भूपतिर एकटा श्रद्धा छिल। भूपति भाबित, "बलिबार कथा किछुइ नाइ अथच एत कथा अनर्गल बानाइय़ा बला से तो आमि माथा कुटिय़ा मरिलेओ पारिताम ना। अमलेर पेटे ये एत क्षमता छिल ताहा के जानित।'

भूपति निजेर रसज्ञता अस्बीकार करित किन्तु साहित्येर प्रति ताहार कृपणता छिल ना। दरिद्र लेखक ताहाके धरिय़ा पड़िले बइ छापिबार खरच भूपति दित, केबल बिशेष करिय़ा बलिय़ा दित, "आमाके येन उत्सर्ग करा ना हय़।" बांला छोटो बड़ो समस्त साप्ताहिक एबं मासिक पत्र, ख्यात अख्यात पाठ्य अपाठ्य समस्त बइ से किनित। बलित, "एके तो पड़ि ना, तार परे यदि ना किनि तबे पापओ करिब प्राय़श्चित्तओ हइबे ना।"

पड़ित ना बलिय़ाइ मन्द बइय़ेर प्रति ताहार लेशमात्र बिद्वेष छिल ना, सेइजन्य ताहार बांला लाइब्रेरि ग्रन्थे परिपूर्ण छिल।

अमल भूपतिर इंरेजि प्रुफ-संशोधन-कार्ये साहाय्य करित; कोनोएकटा कापिर दुर्बोध्य हस्ताक्षर देखाइय़ा लइबार जन्य से एकताड़ा कागजपत्र लइय़ा घरे ढुकिल।

भूपति हासिय़ा कहिल, "अमल, तुमि आषाढ़ेर चाँद आर भाद्र मासेर पाका तालेर उपर यतखुशि लेखो, आमि ताते कोनो आपत्ति करि ने-- आमि कारो स्बाधीनताय़ हात दिते चाइ ने-- किन्तु आमार स्बाधीनताय़ केन हस्तक्षेप। सेगुलो आमाके ना पड़िय़े छाड़बेन ना, तोमार बोठानेर ए की अत्याचार।"

अमल हासिय़ा कहिल, "ताइ तो बोठान-- आमार लेखागुलो निय़े तुमि ये दादाके जुलुम करबार उपाय़ बेर करबे, एमन जानले आमि लिखतुम ना।"

साहित्यरसे बिमुख भूपतिर काछे आनिय़ा ताहार अत्यन्त दरदेर लेखागुलिके अपदस्थ कराते अमल मने मने चारुर उपर राग करिल एबं चारु तत्क्षणात् ताहा बुझिते पारिय़ा बेदना

पाइल। कथाटाके अन्य दिके लइया याइबार जन्य भूपतिके कहिल, "तोमार भाइटिर एकटि बिये दिये दाओ देखि, ता हले आर लेखार उपद्रब सह्य करते हबे ना।"

भूपति कहिल, "एखनकार छेलेरा आमादेर मतो निर्बोध नय। तादेर यत कबित्ब लेखाय, काजेर बेलाय सेयाना। कइ, तोमार देओरके तो बिये करते राजि कराते पारले ना।"

चारु चलिया गेले भूपति अमलके कहिल, "अमल, आमाके एइ कागजेर हाङ्गामे थाकते हय, चारु बेचारा बड़ो एकला पड़ेछे। कोनो काजकर्म नेइ, माझे माझे आमार एइ लेखबार घरे उँकि मेरे चले याय। की करब बलो। तुमि, अमल, ओके एकटु पड़ाशुनोय नियुक्त राखते पारले भालो हय। माझे माझे चारुके यदि इंरेजि काब्य थेके तर्जमा करे शोनाओ ता हले ओर उपकारओ हय, भालू लागे। चारुर साहित्ये बेश रुचि आछे।" अमल कहिल, "ता आछे। बोठान यदि आरो एकटु पड़ाशुनो करेन ता हले आमार बिश्बास उनि निजे बेश भालो लिखते पारबेन।" भूपति हासिया कहिल, "ततटा आशा करि ने, किन्तु चारु बांला लेखार भालोमन्द आमार चेये ढेर बुझते पारे।" अमल। और कल्पनाशक्ति बेश आछे, स्त्रीलोकेर मध्ये एमन देखा याय ना।

भूपति। पुरुषेर मध्येओ कम देखा याय, तार साक्षी आमि। आच्छा, तुमि तोमार बउठाकरुनके यदि गड़े तुलते पार आमि तोमाके पारितोषिक देब।

अमल। की देबे शुनि।

भूपति। तोमार बउठाकरुनेर जुड़ि एकटि खुँजे-पेते एने देब।

अमल। आबार ताके निये पड़ते हबे! चिरजीबन कि गड़े तुलतेइ काटाब। दुटि भाइ आजकालकार छेले, कोनो कथा ताहादेर मुखे बाधे ना।

चतुर्थ परिच्छेद

पाठकसमाजे प्रतिपत्ति लाभ करिया अमल एखन माथा तुलिया उठियाछे। आगे से स्कुलेर छात्रटिर मतो थाकित, एखन से येन समाजेर गण्यमान्य मानुषेर मतो हइया उठियाछे। माझे माझे सभाय साहित्यप्रबन्ध पाठ करे -- सम्पादक ओ सम्पादकेर दूत ताहार घरे आसिया बसिया थाके, ताहाके निमन्त्रण करिया खाओयाय, नाना सभार सभ्य ओ सभापति हइबार जन्य ताहार निकट

अनुरोध आसे, भूपतिर घरे दासदासी-आत्मीय़स्बजनेर चक्षे ताहार प्रतिष्ठास्थान अनेकटा उपरे उठिय़ा गेछे।

मन्दाकिनी एतदिन ताहाके बिशेष एकटा केह बलिय़ा मने करे नाइ। अमलओ चारुर हास्यालाप-आलोचनाके से छेलेमानुषि बलिय़ा उपेक्षा करिय़ा पान साजित ओ घरेर काजकर्म करित; निजेके से उहादेर चेय़े श्रेष्ठ एबं संसारेर पक्षे आबश्यक बलिय़ाइ जानित।

अमलेर पान खाओय़ा अपरिमित छिल। मन्दार उपर पान साजिबार भार थाकाते से पानेर अयथा अपब्यय़े बिरक्त हइत। अमले चारुते षड़यन्त्र करिय़ा मन्दार पानेर भाण्डार प्राय़इ लुठ करिय़ा आना ताहादेर एकटा आमोदेर मध्ये छिल। किन्तु एइ शौखिन चोर दुटिर चौर्यपरिहास मन्दार काछे आमोदजनक बोध हइत ना।

आसल कथा, एकजन आश्रित अन्य आश्रितके प्रसन्नचक्षे देखे ना। अमलेर जन्य मन्दाके येटुकु गृहकर्म अतिरिक्त करिते हइबे सेटुकुते से येन किछु अपमान बोध करित। चारु अमलेर पक्षपाती छिल बलिय़ा मुख फुटिय़ा किछु बलिते पारित ना, किन्तु अमलके अबहेला करिबार चेष्टा ताहार सर्बदाइ छिल। सुयोग पाइलेइ दासदासीदेर काछेओ गोपने अमलेर नामे खोँचा दिते से छाड़িत ना। ताहाराओ योग दित।

किन्तु अमलेर यखन अभ्युत्थान आरम्भ हइल तखन मन्दार एकटु चमक लागिल। से अमल एखन आर नाइ। एखन ताहार संकुचित नम्रता एकेबारे घुचिय़ा गेछे। अपरके अबज्ञा करिबार अधिकार एखन येन ताहारइ हाते। सांसारे प्रतिष्ठा प्राप्त हइय़ा ये पुरुष असंशय़े अकुण्ठितभाबे निजेके प्रचार करिते पारे, ये लोक एकटा निश्चित अधिकार लाभ करिय़াछे, सेइ समर्थ पुरुष सहजेइ नारीर दृष्टि आकर्षण करिते पारे। मन्दा यखन देखिल अमल चारि दिक हइतेइ श्रद्धा पाइतेछे तखन सेओ अमलेर उच्च मस्तकेर दिके मुख तुलिय़ा चाहिल। अमलेर तरुण मुखे नबगौरबेर गर्बोज्ज्बल दीप्ति मन्दार चक्षे मोह आनिल; से येन अमलके नूतन करिय़ा देखिल।

एखन आर पान चुरि करिबार प्रय़োजन रहिल ना। अमलेर ख्यातिलाभे चारुर एइ आर-एकटा लोकसान; ताहादेर षड़यन्त्रेर कौतुकबन्धनटुकु बिच्छिन्न हइय़া गेल; पान एखन अमलेर काछे आपनि आसिय़া पड़े, कोनो अभाब हय़ ना।

ताहा छाड़া, ताहादेर दुइजने-गठित दल हइते मन्दाकिनीके नाना कौशले दूरे राखिय़া ताहारा ये आमोद बोध करित, ताहाओ नष्ट हइबार उपक्रम हइय़াछे। मन्दाके तफाते राखा कठिन हइल। अमल ये मने करिबे चारुइ ताहार एकमात्र बन्धु ओ समजदार, इहा मन्दार भालो लागित ना। पूर्बकृत अबहेला से सुदे आसले शोध दिते उद्यत। सुतरां अमले चारुते मुखोमुखि हइलेइ मन्दा

कोनो छलेमाझखाने आसिय़ा छाय़ा फेलिय़ा ग्रहण लागाइय़ा दित। हठात् मन्दार एइ परिबर्तन लइय़ा चारु ताहार असाक्षाते ये परिहास करिबे से अबसरटुकु पाओय़ा शक्त हइल।

मन्दार एइ अनाहूत प्रबेश चारुर काछे यत बिरक्तिकर बोध हइत अमलेर काछे ततटा बोध हय़ नाइ, ए कथा बला बाहुल्य। बिमुख रमणीर मन क्रमश ताहार दिके ये फिरितेछे, इहाते भितरे भितरे से एकटा आग्रह अनुभब करितेछिल।

किन्तु चारु यखन दूर हइते मन्दाके देखिय़ा तीब्र मृदुस्बरे बलित "ऐ आसछेन" तखन अमलओ बलित, "ताइ तो, ज्बालाले देखछि।" पृथिबीर अन्य-सकल सङ्गेर प्रति असहिष्णुता प्रकाश करा ताहादेर एकटा दस्तुर छिल; अमल सेटा हठात् की बलिय़ा छाड़े। अबशेषे मन्दाकिनी निकटबर्तिनी हइले अमल येन बलपूर्बक सौजन्य करिय़ा बलित, "तार परे, मन्दा-बउठान, आज तोमार पानेर बाटाय़ बाटपाड़िर लक्षण किछु देखले!"

मन्दा। यखन चाइलेइ पाओ भाइ, तखन चुरि करबार दरकार!

अमल। चेय़े पाओय़ार चेय़े ताते सुख बेशि।

मन्दा। तोमरा की पड़छिले पड़ो-ना, भाइ। थामले केन। पड़ा शुनते आमार बेश लागे।

इतिपूर्बे पाठानुरागेर जन्य ख्याति अर्जन करिते मन्दार किछुमात्र चेष्टा देखा याय़ नाइ, किन्तु "कालोहि बलबत्तरः'।

चारुर इच्छा नहे अरसिका मन्दार काछे अमल पड़े, अमलेर इच्छा मन्दाओ ताहार लेखा शोने।

चारु। अमल कमलाकान्तेर दप्तरेर समालोचना लिखे एनेछे, से कि तोमार--

मन्दा। हलेमइ बा मुख्खु, तबु शुनले कि एकेबारेइ बुझते पारि ने।

तखन आर-एकदिनेर कथा अमलेर मने पड़िल। चारुते मन्दाते बिन्ति खेलितेछे, से ताहार लेखा हाते करिय़ा खेलासभाय़ प्रबेश करिल। चारुके शुनाइबार जन्य से अधीर, खेला भाङितेछे ना देखिय़ा से बिरक्त। अबशेषे बलिय़ा उठिल, "तोमरा तबे खेलो बउठान, आमि अखिलबाबुके लेखाटा शुनिय़े आसि गे।"

चारु अमलेर चादर चापिया़ कहिल, "आः, बोसो-ना, याओ कोथाय़।" बलिया़ ताड़ाताड़ि हारिया़ खेला शेष करिया़ दिल।

मन्दा बलिल, "तोमादेर पड़ा आरम्भ हबे बुझि? तबे आमि उठि।"

चारु भद्रता करिया़ कहिल, "केन, तुमिओ शोनो-ना भाइ।

मन्दा। ना भाइ, आमि तोमादेर ओ-सब छाइपाँश किछुइ बुझि ने; आमारकेबल घुम पाय़। बलिया़ से अकाले खेलाभङ्गे उभय़ेर प्रति अत्यन्त बिरक्त हइया़ चलिया़ गेल।

सेइ मन्दा आज कमलाकान्तेर समालोचना शुनिबार जन्य उत्सुक। अमल कहिल, "ता बेश तो मन्दा-बउठान, तुमि शुनबे से तो आमार सौभाग्य।" बलिया़ पात उलटाइया़ आबार गोड़ा हइते पड़िबार उपक्रम करिल; लेखार आरम्भे से अनेकटा परिमाण रस छड़ाइय़ाछिल, सेटुकु बाद दिया़ पड़िते ताहार प्रबृत्ति हइल ना।

चारु ताड़ाताड़ि बलिल, "ठाकुरपो, तुमि ये बलेछिले जाह्नबी लाइब्रेरि थेके पुरोनो मासिक पत्र कतकगुलो एने देबे।"

अमल। से तो आज नय़।

चारु। आजइ तो। बेश। भुले गेछ बुझि।

अमल। भुलब केन। तुमि ये बलेछिले--

चारु। आच्छा बेश, एनो ना। तोमरा पड़ो। आमि याइ, परेशके लाइब्रेरिते पाठिय़े दिइ गे। बलिया़ चारु उठिया़ पड़िल।

अमल बिपद आशङ्का करिल। मन्दा मने मने बुझिल एबं मुहूर्तेर मध्येइ चारुर प्रति ताहार मन बिषाक्त हइया़ उठिल। चारु चलिया़ गेले अमल यखन उठिबे कि ना भाबिया़ इतस्तत करितेछिल मन्दा ईषत् हासिया़ कहिल, "याओ भाइ, मान भाङाओ गे; चारु राग करेछे। आमाके लेखा शोनाले मुशकिले पड़बे।"

इहार परे अमलेर पक्षे ओठा अत्यन्त कठिन। अमल चारुर प्रति किछु रुष्ट हइया़ कहिल, "केन, मुशकिल किसेर।" बलिया़ लेखा बिस्तृत करिया़ पड़िबार उपक्रम करिल।

मन्दा दुइ हाते ताहार लेखा आच्छादन करिया़ बलिल, "काज नेइ भाइ, पोड़ो ना।" बलिया़, येन अश्रु सम्बरण करिया़, अन्यत्र चलिया़ गेल।

पञ्चम परिच्छेद

चारु निमन्त्रणे गिया़छिल। मन्दा घरे बसिया़ चुलेर दड़ि बिनाइतेछिल। "बउठान" बलिया़ अमल घरेर मध्ये प्रबेश करिल। मन्दा निश्चय़ जानित ये, चारुर निमन्त्रणे याओय़ार संबाद अमलेर अगोचर छिल ना; हासिया़ कहिल, "आहा अमलबाबु, काके खुँजते एसे कार देखा पेले। एमनि तोमार अदृष्ट।" अमल कहिल, "बाँ दिकेर बिचालिओ येमन डान दिकेर बिचालिओ ठिक तेमनि, गर्दभेर पक्षे दुइइ समान आदरेर।" बलिया़ सेइखाने बलिया़ गेल।

अमल। मन्दा-बोठान, तोमादेर देशेर गल्प बलो, आमि शुनि।

लेखार बिषय़ संग्रह करिबार जन्य अमल सकलेर सब कथा कौतूहलेर सहित शुनित। सेइ कारणे मन्दाके एखन से आर पूर्बेर न्याय़ सम्पूर्ण उपेक्षा करित ना। मन्दार मनस्तत्त्ब, मन्दार इतिहास, एखन ताहार काछे औत्सुक्यजनक। कोथाय़ ताहार जन्मभूमि, ताहादेर ग्रामटि किरूप, छेलेबेला केमन करिया़ काटित, बिबाह हइल कबे, इत्यादि सकल कथाइ से खुँटिया़ खुँटिया़ जिज्ञासा करिते लागिल। मन्दार क्षुद्र जीबनबृत्तान्त सम्बन्धे एत कौतूहल केह कखनो प्रकाश करे नाइ। मन्दा आनन्दे निजेर कथा बकिया़ याइते लागिल; माझे माझे कहिल, "की बकछि तार ठिक नाइ।"

अमल उत्साह दिया़ कहिल, "ना, आमार बेश लागछे, बले याओ।" मन्दार बापेर एक काना गोमस्ता छिल, से ताहार द्वितीय़ पक्षेर स्त्रीर सङ्गे झगड़ा करिया़ एक-एकदिन अभिमाने अनशनब्रत ग्रहण करित, अबशेषे क्षुधार ज्बालाय़ मन्दादेर बाड़िते किरूपे गोपने आहार करिते आसित एबं दैबात् एकदिन स्त्रीर काछे किरूपे धरा पड़िया़छिल, सेइ गल्प यखन हइतेछे एबं अमल मनोयोगेर सहित शुनिते शुनिते सकौतुके हासितेछे, एमन समय़ चारु घरेर मध्ये आसिया़ प्रबेश करिल।

गल्पेर सूत्र छिन्न हइया़ गेल। ताहार आगमने हठात् एकटा जमाट सभा भाङिया़ गेल, चारु ताहा स्पष्टइ बुझिते पारिल।

अमल जिज्ञासा करिल, "बउठान, एत सकाल-सकाल फिरे एले ये।"

चारु कहिल, "ताइ तो देखछि। बेशि सकाल-सकालइ फिरेछि।" बलिया चलिया याइबार उपक्रम करिल।

अमल कहिल, "भालै करेछ, बाँचियेछ आमाके। आमि भाबछिलुम, कखन ना जानि फिरबे। मन्मथ दत्तर "सन्ध्यार पाखि' बले नूतन बइटा तोमाके पड़े शोनाब बले एनेछि।"

चारु। एखन थाक्, आमार काज आछे।

अमल। काज थाके तो आमाके हुकुम करो, आमि करे दिच्छि।

चारु जानित अमल आज बइ किनिया आनिया ताहाके शुनाइते आसिबे; चारु ईर्षा जन्माइबार जन्य मन्मथर लेखार प्रचुर प्रशंसा करिबे एबं अमल सेइ बइटाके बिकृत करिया पड़िया बिद्रूप करिते थाकिबे। एइ-सकल कल्पना करियाइ अधैर्यबशत से अकाले निमन्त्रणगृहेर समस्त अनुनयबिनय लङ्घन करिया असुखेर छुताय गृहे चलियाआसितेछे। एखन बारबार मने करितेछे, "सेखाने छिलाम भालो, चलिया आसा अन्याय हइयाछे।'

मन्दाओ तो कम बेहाया नय। एकला अमलेर सहित एकघरे बसिया दाँत बाहिर करिया हासितेछे। लोके देखिले की बलिबे। किन्तु मन्दाके ए कथा लइया भरत्सना करा चारुर पक्षे बड़ो कठिन। कारण, मन्दा यदि ताहारइ दृष्टान्तेर उल्लेख करिया जबाब देय। किन्तु से हइल एक, आर ए हइल एक। से अमलके रचनाय उत्साह देय, अमलेर सङ्गे साहित्यालोचना करे, किन्तु मन्दार तो से उद्देश्य आदबेइ नय। मन्दा निःसन्देहइ सरल युबकके मुग्ध करिबार जन्य जाल बिस्तार करितेछे। एइ भयंकर बिपद हइते बेचारा अमलके रक्षा करा ताहारइ कर्तब्य। अमलके एइ मायाबिनीर मतलब केमन करिया बुझाइबे। बुझाइले ताहार प्रलोभनेर निबृत्ति ना हइया यदि उलटा हय।

बेचारा दादा! तिनि ताँहार स्बामीर कागज लइया दिन रात खाटिया मरितेछेन, आर मन्दा किना कोणटिते बसिया अमलके भुलाइबार जन्य आयोजन करितेछे। दादा बेश निश्चिन्त आछेन। मन्दार उपरे ताँर अगाध बिश्बास। ए-सकल ब्यापार चारु की करिया स्बचक्षे देखिया स्थिर थाकिबे। भारि अन्याय।

किन्तु आगे अमल बेश छिल, येदिन हइते लिखिते आरम्भ करिया़ नाम करिया़छे सेइ दिन हइतेइ यत अनर्थ देखा याइतेछे। चारुइ तो ताहार लेखार गोड़ा। कुक्षणे से अमलके रचनाय़ उत्साह दिया़छिल। एखन कि आर अमलेर 'परे ताहार पूर्बेर मतो जोर खाटिबे। एखन अमल पाँचजनेर आदरेर स्बाद पाइय़ाछे, अतएब एकजनके बाद दिले ताहार आसे याय़ ना।

चारु स्पष्टइ बुझिल, ताहार हात हइते गिया़ पाँचजनेर हाते पड़िया़ अमलेर समूह बिपद। चारुके अमल एखन निजेर ठिक समकक्ष बलिया़ जाने ना; चारुके से छाड़ाइया़ गेछे। एखन से लेखक, चारु पाठक। इहार प्रतिकार करितेइ हइबे।

आहा, सरल अमल, माया़बिनी मन्दा, बेचारा दादा।

षष्ठ परिच्छेद

सेदिन आषाढ़ेर नबीन मेघे आकाश आच्छन्न। घरेर मध्ये अन्धकार घनीभूत हइय़ाछे बलिया़ चारु ताहार खोला जानालार काछे एकान्त झुँकिया़ पड़िया़ की एकटा लिखितेछे।

अमल कखन निःशब्दपदे पश्चाते आसिया़ दाँड़ाइल ताहा से जानिते पारिल ना। बादलार स्निग्ध आलोके चारु लिखिया़ गेल, अमल पड़िते लागिल। पाशे अमलेरइ दुइ-एकटा छापानो लेखा खोला पड़िया़ आछे; चारुर काछे सेइगुलिइ रचनार एकमात्र आदर्श।

"तबे ये बल, तुमि लिखते पार ना!" हठात् अमलेर कण्ठ शुनिया़ चारु अत्यन्त चमकिया़ उठिल; ताड़ाताड़ि खाता लुकाइया़ फेलिल; कहिल, "तोमार भारि अन्याय़।"

अमल। की अन्याय़ करेछि।

चारु। नुकिये़ नुकिये़ देखछिले केन।

अमल। प्रकाश्ये देखते पाइ ने बले।

चारु ताहार लेखा छिँड़िया़ फेलिबार उपक्रम करिल। अमल फस्

करिया ताहार हात हइते खाता काड़िया लइल। चारु कहिल, "तुमि यदि पड़ तोमार सङ्गे जन्मेर मतो आड़ि।" अमल। यदि पड़ते बारण कर ता हले तोमार सङ्गे जन्मेर मत आड़ि। चारु। आमार माथा खाओ ठाकुरपो, पोड़ो ना। अबशेषे चारुकेइ हार मानिते हइल। कारण, अमलके ताहार लेखा देखाइबार जन्य मन छट्फट्करितेछिल, अथच देखाइबार बेलाय़ ये ताहार एत लज्जा करिबे ताहा से भाबे नाइ। अमल यखन अनेक अनुनय़ करिया पड़िते आरम्भ करिल तखन लज्जाय़ चारुर हात-पा बरफेर मतो हिम हइया गेल। कहिल, "आमि पान निय़े आसि गे।" बलिया ताड़ाताड़ि पाशेर घरे पान साजिबार उपलक्ष करिया चलिया गेल।

अमल पड़ा साङ्ग करिया चारुके गिया कहिल, "चमत्कार हय़ेछे।" चारु पाने खय़ेर दिते भुलिया कहिल, "याओ, आर ठाट्टा करते हबे ना। दाओ, आमार खाता दाओ।" अमल कहिल, "खाता एखन देब ना, लेखाटा कपि करे निय़े कागजे पाठाब।" चारु। हाँ, कागजे पाठाबे बैकि! से हबे ना। चारु भारि गोलमाल करिते लागिल। अमलओ किछुते छाड़िल ना। से यखन बारबार शपथ करिया कहिल, "कागजे दिबार उपयुक्त हइय़ाछे" तखन चारु येन नितान्त हताश हइया कहिल, "तोमार सङ्गे तो पेरे ओठबार जो नेइ! येटा धरबे से आर किछुतेइ छाड़बे ना!"

अमल कहिल, "दादाके एकबार देखाते हबे।"

शुनिया चारु पान साजा फेलिया आसन हइते बेगे उठिया पड़िल; खाता काड़िबार चेष्टा करिया कहिल, "ना, ताँके शोनाते पाबे ना। ताँके यदि आमार लेखार कथा बल ता हले आमि आर एक अक्षर लिखब ना।"

अमल। बउठान, तुमि भारि भुल बुझछ। दादा मुखे याइ बलुन, तोमार लेखा देखले खुब खुशि हबेन।

चारु। ता होक, आमार खुशिते काज नेइ।

चारु प्रतिज्ञा करिया बसिय़ाछिल से लिखिबे--अमलके आश्चर्य करिया दिबे; मन्दार सहित ताहार ये अनेक प्रभेद ए कथा प्रमाण ना करिया से छाड़िबे ना। ए कय़दिन बिस्तर लिखिया से छिँड़िया फेलिय़ाछे। याहा लिखिते याय़ ताहा नितान्त अमलेर लेखार मतो हइया उठे; मिलाइते गिया देखे एक-एकटा अंश अमलेर रचना हइते प्राय़ अबिकल उद्धृत हइया आसिय़ाछे। सेइगुलिइ भालो, बाकिगुला काँचा। देखिले अमल निश्चय़इ मने मने हासिबे, इहाइ कल्पना करिया चारु

सेसकल लेखा कुटि कुटि करिय़ा छिँड़िय़ा पुकुरेर मध्ये फेलिय़ा दिय़ाछे, पाछे ताहार एकटा खण्डओ दैबात् अमलेर हाते आसिय़ा पड़े।

प्रथमे से लिखिय़ाछिल "श्राबणेर मेघ'। मने करिय़ाछिल, "भाबाश्रुजले अभिषिक्त खुब एकटा नूतन लेखा लिखिय़ाछि।' हठात् चेतना पाइय़ा देखिल जिनिसटा अमलेर "आषाढ़ेर चाँद'-एर एपिठ-ओपिठ मात्र। अमल लिखिय़ाछे, "भाइ चाँद, तुमि मेघेर मध्ये चोरेर मतो लुकाइय़ा बेड़ाइतेछ केन।' चारु लिखिय़ाछिल, "सखी कादम्बिनी, हठात् कोथा हइते आसिय़ा तोमार नीलाञ्चलेर तले चाँदके चुरि करिय़ा पलाय़न करितेछ' इत्यादि।

कोनोमतेइ अमलेर गण्डि एड़ाइते ना पारिय़ा अबशेषे चारु रचनार बिषय़ परिबर्तन करिल। चाँद, मेघ, शेफालि, बउ-कथा-कओ, ए समस्त छाड़िय़ा से "कालीतला' बलिय़ा एकटा लेखा लिखिल। ताहादेर ग्रामे छाय़ाय़-अन्धकार पुकुरटिर धारे कालीर मन्दिर छिल; सेइ मन्दिरटि लइय़ा ताहार बाल्यकालेर कल्पना भय़ औत्सुक्य, सेइ सम्बन्धे ताहार बिचित्र स्मृति, सेइ जाग्रत ठाकुरानीर माहात्म्य सम्बन्धे ग्रामे चिरप्रचलित प्राचीन गल्प-- एइ-समस्त लइय़ा से एकटि लेखा लिखिल। ताहार आरम्भ-भाग अमलेर लेखार छाँदे काब्याड़म्बरपूर्ण हइय़ाछिल, किन्तु खानिकटा अग्रसर हइतेइ ताहार लेखा सहजेइ सरल एबं पल्लीग्रामेर भाषा-भङ्गि-आभासे परिपूर्ण हइय़ा उठिय़ाछिल।

एइ लेखाटा अमल काड़िय़ा लइय़ा पड़िल। ताहार मने हइल, गोड़ार दिकटा बेश सरस हइय़ाछे, किन्तु कबित्ब शेष पर्यन्त रक्षित हय़ नाइ। याहा हौक, प्रथम रचनार पक्षे लेखिकार उद्यम प्रशंसनीय़।

चारु कहिल, "ठाकुरपो, एसो आमरा एकटा मासिक कागज बेर करि। की बल।"

अमल। अनेकगुलि रौप्यचक्र ना हले से कागज चलबे की करे।

चारु। आमादेर ए कागजे कोनो खरच नेइ। छापा हबे ना तो-- हातेर अक्षरे लिखब। ताते तोमार आमार छाड़ा आर कारो लेखा बेरबे ना, काउके पड़ते देओय़ा हबे ना। केबल दु कपि करे बेर हबे; एकटि तोमार जन्ये, एकटि आमार जन्ये।

किछुदिन पूर्बे हइले अमल ए प्रस्ताबे मातिय़ा उठित; एखन गोपनतार उत्साह ताहार चलिय़ा गेछे। एखन दशजनके उद्देश ना करिय़ा कोनो रचनाय़ से सुख पाय़ ना। तबु साबेक कालेर ठाट बजाय़ राखिबार जन्य उत्साह प्रकाश करिल। कहिल, "से बेश मजा हबे।"

चारु कहिल, "किन्तु प्रतिज्ञा करते हबे, आमादेर कागज छाड़ा आर कोथाओ तुमि लेखा बेर करते पारबे ना।"

अमल। ता हले सम्पादकरा ये मेरेइ फेलबे।

चारु। आर आमार हाते बुझि मारेर अस्त्र नेइ?

सेइरूप कथा हइल। दुइ सम्पादक, दुइ लेखक एबं दुइ पाठके मिलिया़ कमिटि बसिल। अमल कहिल, "कागजेर नाम देओया़ याक चारुपाठ।" चारु कहिल, "ना, एर नाम अमला।"

एइ नूतन बन्दोबस्ते चारु माझेर कय़दिनेर दुःखबिरक्ति भुलिया़ गेल। ताहादेर मासिक पत्रटिते तो मन्दार प्रबेश करिबार कोनो पथ नाइ एबं बाहिरेर लोकेरओ प्रबेशेर द्वार रुद्ध।

सप्तम परिच्छेद

भूपति एकदिन आसिया़ कहिल, "चारु, तुमि ये लेखिका हय़े उठबे, पूर्बे एमन तो कोनो कथा छिल ना।"

चारु चमकिया़ लाल हइया़ उठिया़ कहिल, "आमि लेखिका! के बलल तोमाके। कख्खनो ना।"

भूपति। बामालसुद्ध ग्रेफ्तार। प्रमाण हाते-हाते। बलिया़ भूपति एकखण्डसरोरुह बाहिर करिल। चारु देखिल, ये-सकल लेखा से ताहादेर गुप्त सम्पत्ति मने करिया़ निजेदेर हस्तलिखित मासिक पत्रे सञ्चय़ करिया़ राखितेछिल ताहाइ लेखक-लेखिकार नामसुद्ध सरोरुहे प्रकाश हइया़छे।

के येन ताहार खाँचार बड़ो साधेर पोषा पाखिगुलिके द्वार खुलिया़ उड़ाइया़ दिया़छे, एमनि ताहार मने हइल। भूपतिर निकटे धरा पड़िबार लज्जा भुलिया़ गिया़ बिश्बासघाती अमलेर उपर ताहार मने मने अत्यन्त राग हइते लागिल।

"आर एइटे देखो देखि।" बलिया़ बिश्बबन्धु खबरेर कागज खुलिया़ भूपति चारुर सम्मुखे धरिल। ताहाते "हाल बांला लेखार ढं' बलिया़ एकटा प्रबन्ध बाहिर हइया़छे।

चारु हात दिया ठेलिया दिया कहिल, "ए पड़े आमि की करब।" तखन अमलेर उपर अभिमाने आर कोनो दिके से मन दिते पारितेछिल ना। भूपति जोर करिया कहिल, "एकबार पड़े देखै-ना।"

चारु अगत्या चोख बुलाइया गेल। आधुनिक कोनो कोनो लेखकश्रेणीर भाबाड़म्बरे पूर्ण गद्य लेखाके गालि दिया लेखक खुब कड़ा प्रबन्ध लिखियाछे। ताहार मध्ये अमल एबं मन्मथ दत्तर लेखार धाराके समालोचक तीब्र उपहास करियाछे, एबं ताहारइ सङ्गे तुलना करिया नबीना लेखिका श्रीमती चारुबालार भाषार अकृत्रिम सरलता, अनायास सरसता एबं चित्ररचनानैपुण्येर बहुल प्रशंसा करियाछे। लिखियाछे, एइरूप रचनाप्रणालीर अनुकरण करिया सफलता लाभ करिले तबेइ अमलकोम्पानिर निस्तार, नचेत् ताहारा सम्पूर्ण फेल करिबे इहाते कोनो सन्देह नाइ।

भूपति हासिया कहिल, "एकेइ बले गुरुमारा बिद्ये।"

चारु ताहार लेखार एइ प्रथम प्रशंसाय एक-एकबार खुशि हइते गिया तत्क्षणात् पीड़ित हइते लागिल। ताहार मन येन कोनोमतेइ खुशि हइते चाहिल ना। प्रशंसार लोभनीय सुधापात्र मुखेर काछ पर्यन्त आसितेइ ठेलिया फेलिया दिते लागिल।

से बुझिते पारिल, ताहार लेखा कागजे छापाइया अमल हठात् ताहाके बिस्मित करिया दिबार संकल्प करियाछिल। अबशेषे छापा हइले पर स्थिर करियाछिल कोनो-एकटा कागजे प्रशंसापूर्ण समालोचना बाहिर हइले दुइटा एकसङ्गे देखाइया चारुर रोषशान्ति ओ उत्साहबिधान करिबे। यखन प्रशंसा बाहिर हइल तखन अमल केन आग्रहेर सहित ताहाके देखाइते आसिल ना। ए समालोचनाय अमलाअघात पाइयाछे एबं चारुके देखाइते चाहे ना बलियाइ ए कागजगुलि से एकेबारे गोपन करिया गेछे। चारु आरामेर जन्य अति निभृते ये एकटि क्षुद्र साहित्यनीड़ रचना करितेछिल हठात् प्रशंसा-शिलाबृष्टिर एकटा बड़ो रकमेर शिला आसिया सेटाके एकेबारे स्खलित करिबार जो करिल। चारुर इहा एकेबारेइ भालो लागिल ना।

भूपति चलिया गेले चारु ताहार शोबार घरेर खाटे चुप करिया बसिया रहिल; सम्मुखे सरोरुह एबं बिश्बबन्धु खोला पड़िया आछे।

खाता-हाते अमल चारुके सहसा चकित करिया दिबार जन्य पश्चात् हइते निःशब्दपदे प्रबेश करिल। काछे आसिया देखिल, बिश्बबन्धुर समालोचना खुलिया चारु निमग्नचित्ते बसिया आछे।

पुनराय निःशब्दपदे अमल बाहिर हइया गेल। "आमाके गालि दिया चारुर लेखाके प्रशंसा करियाछे बलिया आनन्दे चारुर आर चैतन्य नाइ।' मुहूर्तेर मध्ये ताहार चित्त येन तिक्तस्बाद हइया

उठिल। चारु ये मुर्खेर समालोचना पड़िया निजेके आपन गुरुर चेये मस्त मने करियाछे, इहा निश्चय स्थिर करिया अमल चारुर उपर भारि राग करिल। चारुर उचित छिल कागजखाना टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया आगुने छाइ करिया पुड़ाइया फेला।

चारुर उपर राग करिया अमल मन्दार घरेर द्वारे दाँड़ाइया सशब्दे डाकिल, "मन्दा-बउठान।"

मन्दा। एसो भाइ, एसो। ना चाइतेइ ये देखा पेलुम। आज आमार की भाग्यि।

अमल। आमार नूतन लेखा दु-एकटा शुनबे?

मन्दा। कतदिन थेके "शोनाब शोनाब' करे आशा दिये रेखेछ किन्तु शोनाओ ना तो। काज नेइ भाइ-- आबार के कोन्दिक थेके राग करे बसले तुमिइ बिपदे पड़बे-- आमार की।

अमल किछु तीब्रस्बरे कहिल, "राग करबेन के। केनइ बा राग करबेन। आच्छा से देखा याबे, तुमि एखन शोनै तो।"

मन्दा येन अत्यन्त आग्रहे ताड़ाताड़ि संयत हइया बसिल। अमल सुर करिया समारोहेर सहित पड़िते आरम्भ करिल।

अमलेर लेखा मन्दार पक्षे नितान्तइ बिदेशी, ताहार मध्ये कोथाओ से कोनो किनारा देखिते पाय ना। सेइजन्यइ समस्त मुखे आनन्देर हासि आनिया अतिरिक्तब्यग्रतार भाबे से शुनिते लागिल। उत्साहे अमलेर कण्ठे उत्तरोत्तर उच्च हइया उठिल।

से पड़ितेछिल-- "अभिमन्यु येमन गर्भबासकाले केबल ब्यूहप्रबेश करिते शिखियाछिल, ब्यूह हइते निर्गमन शेखे नाइ-- नदीर स्रोत सेइरूप गिरिदरीर पाषाण-जठरेर मध्ये थाकिया केबल सम्मुखेइ चलिते शिखियाछिल, पश्चाते फिरिते शेखे नाइ। हाय नदीर स्रोत, हाय यौबन, हाय काल, हाय संसार, तोमरा केबल सम्मुखेइ चलिते पार-- ये पथे स्मृतिर स्बर्णमण्डित उपलखण्ड छड़ाइया आस से पथे आर कोनोदिन फिरिया याओ ना। मानुषेर मनइ केबल पश्चातेर दिके चाय, अनन्त जगत्-संसार से दिके फिरियाओ ताकाय ना।'

एमन समय मन्दार द्वारे काछे एकटि छाया पड़िल, से छाया मन्दा देखिते पाइल। किन्तु येन देखे नाइ एरूप भान करिया अनिमेषदृष्टिते अमलेर मुखेर दिके चाहिया निबिड़ मनोयोगेर सहित पड़ा शुनिते लागिल।

छाया तत्क्षणात् सरिया गेल।

चारु अपेक्षा करिया छिल, अमल आसिलेइ ताहार सम्मुखे बिश्बबन्धु कागजटिके यथोचित लाञ्छित करिबे, एबं प्रतिज्ञा भङ्ग करिया ताहादेर लेखा मासिक पत्रे बाहिर करियाछे बलिया अमलकेओ भरत्सना करिबे।

अमलेर आसिबार समय उत्तीर्ण हइया गेल तबु ताहार देखा नाइ। चारु एकटा लेखा ठिक करिया राखियाछे; अमलके शुनाइबार इच्छा; ताहाओ पड़िया आछे।

एमन समय कोथा हइते अमलेर कन्ठस्बर शुना याय। ए येन मन्दार घरे। शरबिद्धेर मतो से उठिया पड़िल। पायेर शब्द ना करिया से द्वारेर काछे आसिया दाँड़ाइल। अमल ये लेखा मन्दाके शुनाइतेछे एखनो चारु ताहा शोने नाइ। अमल पड़ितेछिल--"मानुषेर मनइ केबल पश्चातेर दिके चाय-- अनन्त जगत्-संसार से दिके फिरियाओ ताकाय ना।'

चारु येमन निःशब्दे आसियाछिल तेमन निःशब्दे आर फिरिया याइते पारिल ना। आज परे परे दुइ-तिनटा आघात ताहाके एकेबारे धैर्यच्युत करिया दिल। मन्दा ये एकबर्णओ बुझितेछे ना एबं अमल ये नितान्त निर्बोध मूढ़ेर मतो ताहाके पड़िया शुनाइया तृप्तिलाभ करितेछे, ए कथा ताहार चीत्कार करिया बलिया आसिते इच्छा करिल। किन्तु ना बलिया सक्रोधे पदशब्दे ताहा प्रचार करिया आसिल। शयनगृहे प्रबेश करिया चारु द्वार सशब्दे बन्ध करिल।

अमल क्षणकालेर जन्य पड़ाय क्षान्त दिल। मन्दा हासिया चारुर उद्देशे इङ्गित करिल। अमल मने मने कहिल, "बउठानेर ए की दौरात्म्य। तिनि कि ठिक करिया राखियाछेन, आमि ताँहारइ क्रीतदास। ताँहाके छाड़ा आर काहाकेओ पड़ा शुनाइते पारिब ना। ए ये भयानक जुलुम।' एइ भाबिया से आरो उच्चैःस्बरे मन्दाके पड़िया शुनाइते लागिल।

पड़ा हइया गेले चारुर घरेर सम्मुख दिया से बाहिरे चलिया गेल। एकबार चाहिया देखिल, घरेर द्वार रुद्ध।

चारु पदशब्दे बुझिल, अमल ताहार घरेर सम्मुख दिया चलिया गेल-- एकबारओ थामिल ना। रागे क्षोभे ताहार कान्ना आसिल ना। निजेर नूतन-लेखा खाताखानि बाहिर करिया ताहार प्रत्येक पाता बसिया बसिया टुकरा टुकरा करिया छिँड़िया स्तूपाकार करिल। हाय, की कुक्षणेइ एइ-समस्त लेखालेखि आरम्भ हइयाछिल।

अष्टम परिच्छेद

सन्ध्यार समय़ बारान्दाय़ टब हइते जुँइफुलेर गन्ध आसितेछिल। छिन्न मेघेर भितर दिय़ा स्निग्ध आकाशे तारा देखा याइतेछिल। आज चारु चुल बाँधे नाइ, कापड़ छाड़े नाइ। जानलार काछे अन्धकारे बसिय़ा आछे, मृदुबातासे आस्ते आस्ते ताहार खोला चुल उड़ाइतेछे, एबं ताहार चोख दिय़ा एमन झर्झर्करिय़ा केन जल बहिय़ा याइतेछे ताहा से निजेइ बुझिते पारितेछे ना।

एमन समय़ भूपति घरे प्रबेश करिल। ताहार मुख अत्यन्त म्लान, हृदय़ भाराक्रान्त। भूपतिर आसिबार समय़ एखन नहे। कागजेर जन्य लिखिय़ा प्रुफ देखिय़ा अन्तःपुरे आसिते प्राय़इ ताहार बिलम्ब हय़। आज सन्ध्यार परेइ येन कोन्सान्त्बना-प्रत्याशाय़ चारुर निकट आसिय़ा उपस्थित हइल।

घरे प्रदीप ज्बलितेछिल ना। खोला जानालार क्षीण आलोके भूपति चारुके बाताय़नेर काछे अस्पष्ट देखिते पाइल; धीरे धीरे पश्चाते आसिय़ा दाँड़ाइल। पदशब्द शुनिते पाइय़ाओ चारु मुख फिराइल ना-- मूर्तिटिर मतो स्थिर हइय़ा कठिन हइय़ा बसिय़ा रहिल।

भूपति किछु आश्चर्य हइय़ा डाकिल, "चारु।"

भूपतिर कण्ठस्बरे सचकित हइय़ा ताड़ाताड़ि उठिय़ा पड़िल। भूपति आसिय़ाछे से ताहा मने करे नाइ। भूपति चारुर माथार चुलेर मध्ये आङुल बुलाइतेबुलाइते स्नेहार्द्रकण्ठे जिज्ञासा करिल, "अन्धकारे तुमि ये एकलाटि बसे आछ, चारु? मन्दा कोथाय़ गेल।"

चारु येमनटि आशा करिय़ाछिल आज समस्त दिन ताहार किछुइ हइल ना। से निश्चय़ स्थिर करिय़ाछिल अमल आसिय़ा क्षमा चाहिबे-- सेजन्य प्रस्तुत हइय़ा से प्रतीक्षा करितेछिल, एमन समय़ भूपतिर अप्रत्याशित कण्ठस्बरे से येन आर आत्मसम्बरण करिते पारिल ना--एकेबारे काँदिय़ा फेलिल।

भूपति ब्यस्त हइय़ा ब्यथित हइय़ा जिज्ञासा करिल, "चारु, की हय़েछे, चारु।"

की हइय़াछे ताहा बला शक्त। एमनइ की हय़েछे। बिशेष तो किछुइ हय़ नाइ। अमल निजेर नूतन लेखा प्रथमे ताहाके ना शुनाइय़ा मन्दाके शुनाइय़াछे ए कथा लइय़ा भूपतिर काछे की नालिश करिबे। शुनिले की भूपति हासिबे ना? एइ तुच्छ ब्यापारेर मध्ये गुरुतर नालिशेर बिषय़ ये कोन्खाने

लुकाइया आछे ताहा खुँजिया बाहिर करा चारुर पक्षे असाध्य। अकारणे से ये केन एत अधिक कष्ट पाइतेछे, इहाइ सम्पूर्ण बुझिते ना पारिया ताहार कष्टेर बेदना आरो बाड़िया उठियाछे।

भूपति। बलो-ना चारु, तोमार की हयेछे। आमि की तोमार उपर कोनो अन्याय करेछि। तुमि तो जानइ, कागजेर झञ्झाट निये आमि किरकम ब्यतिब्यस्त हये आछि, यदि तोमार मने कोनो आघात दिये थाकि से आमि इच्छे करे दिइ नि।

भूपति एमन बिषये प्रश्न करितेछे याहार एकटिओ जबाब दिबार नाइ, सेइजन्य चारु भितरे भितरे अधीर हइया उठिल; मने हइते लागिल, भूपति एखन ताहाके निष्कृति दिया छाड़िया गेले से बाँचे।

भूपति द्वितीयबार कोनो उत्तर ना पाइया पुनर्बार स्नेहसिक्त स्बरे कहिल, "आमि सर्बदा तोमार काछे आसते पारि ने चारु, सेजन्ये आमि अपराधी, किन्तु आर हबे ना। एखन थेके दिनरात कागज निये थाकब ना। आमाके तुमि यतटा चाओ ततटाइ पाबे।"

चारु अधीर हइया बलिल, "सेजन्ये नय।"

भूपति कहिल, "तबे की जन्ये।" बलिया खाटेर उपर बसिल।

चारु बिरक्तिर स्बर गोपन करिते ना पारिया कहिल, "से एखन थाक्, रात्रे बलब।"

भूपति मुहूर्तकाल स्तब्ध थाकिया कहिल, "आच्छा, एखन थाक्।" बलिया आस्तेआस्ते उठिया बाहिरे चलिया गेल। ताहार निजेर एकटा की कथा बलिबार छिल, से आर बला हइल ना।

भूपति ये एकटा क्षोभ पाइया गेल, चारुर काछे ताहा अगोचर रहिल ना। मने हइल, "फिरिया डाकि।' किन्तु डाकिया की कथा बलिबे। अनुतापे ताहाके बिद्ध करिल, किन्तु कोनो प्रतिकार से खुँजिया पाइल ना।

रात्रि हइल। चारु आज सबिशेष यत्न करिया भूपतिर रात्रेर आहार साजाइल एबं निजे पाखा हाते करिया बसिया रहिल।

एमन समय शुनिते पाइल मन्दा उच्चैःस्बरे डाकितेछे, "ब्रज, ब्रज।" ब्रज चाकर साड़ा दिले जिज्ञासा करिल, "अमलबाबुर खाओया हयेछे कि।" ब्रज उत्तर करिल, "हयेछे।" मन्दा कहिल, "खाओया हये गेछे अथच पान निये गेलि ने ये।" मन्दा ब्रजके अत्यन्त तिरस्कार करिते लागिल।

एमन समय़ भूपति अन्तःपुरे आसिय़ा आहारे बसिल, चारु पाखा करिते लागिल।

चारु आज प्रतिज्ञा करिय़ाछिल, भूपतिर सङ्गे प्रफुल्ल स्निग्धभाबे नाना कथा कहिबे। कथाबार्ता आगे हइते भाबिय़ा प्रस्तुत हइय़ा बसिय़ा छिल। किन्तु मन्दार कण्ठस्बरे ताहार बिस्तृत आय़ोजन समस्त भाङिय़ा दिल, आहारकाले भूपतिके से एकटि कथाओ बलिते पारिल ना। भूपतिओ अत्यन्त बिमर्ष अन्यमनस्क हइय़ा छिल। से भालो करिय़ा खाइल ना, चारु एकबार केबल जिज्ञासा करिल, "किछु खाच्छ ना ये।"

भूपति प्रतिबाद करिय़ा कहिल, "केन। कम खाइ नि तो।"

शय़नघरे उभय़े एकत्र हइले भूपति कहिल, "आज रात्रे तुमि की बलबे बलेछिले।"

चारु कहिल, "देखो, किछुदिन थेके मन्दार ब्यबहार आमार भालो बोध हच्छे ना। ओके एखाने राखते आमार आर साहस हय़ ना।"

भूपति। केन, की करेछे।

चारु। अमलेर सङ्गे ओ एमनि भाबे चले ये, से देखले लज्जा हय़।

भूपति हासिय़ा उठिय़ा कहिल, "हाँः, तुमि पागल हय़ेछ! अमल छेलेमानुष। सेदिनकार छेले--"

चारु। तुमि तो घरेर खबर किछुइ राख ना, केबल बाइरेर खबर कुड़िय़े बेड़ाओ। याइ होक, बेचारा दादार जन्ये आमि भाबि। तिनि कखन खेलेन ना खेलेन मन्दा तार कोनो खोँजओ राखे ना, अथच अमलेर पान थेके चुन खसे गेलेइ चाकरबाकरदेर सङ्गे बकाबकि क’रे अनर्थ करे।

भूपति। तोमरा मेय़ेरा किन्तु भारि सन्दिग्ध ता बलते हय़। चारु रागिय़ा बलिल, "आच्छा बेश, आमरा सन्दिग्ध, किन्तु बाड़िते आमि एसमस्त बेहाय़ापना हते देब ना ता बले राखछि।"

चारुर ए-समस्त अमूलक आशङ्काय़ भूपति मने मने हासिल, खुशिओ हइल। गृह याहाते पबित्र थाके, दाम्पत्यधर्मे आनुमानिक काल्पनिक कलङ्कओ लेशमात्र स्पर्श ना करे, एजन्य साध्बी स्त्रीदेर ये अतिरिक्त सतर्कता, ये सन्देहाकुल दृष्टिक्षेप, ताहार मध्ये एकटि माधुर्य एबं महत्त्ब आछे।

भूपति श्रद्धाय़ एबं स्नेहे चारुर ललाट चुम्बन करिय़ा कहिल, "ए निय़े आर कोनो गोल करबार दरकार हबे ना। उमापद मय़मनसिंहे प्र्याक्टिस करते याच्छे, मन्दाकेओ सङ्गे निय़े याबे।"

अबशेषे निजेर दुश्चिन्ता एबं एइ-सकल अप्रीतिकर आलोचना दूर करिय़ा दिबार जन्य भूपति टेबिल हइते एकटा खाता तुलिय़ा लइय़ा कहिल, "तोमार लेखा आमाके शोनाओ-ना, चारु।"

चारु खाता काड़िय़ा लइय़ा कहिल, "ए तोमार भालो लागबे ना, तुमि ठाट्टा करबे।"

भूपति एइ कथाय़ किछु ब्यथा पाइल, किन्तु ताहा गोपन करिय़ा हासिय़ा कहिल, "आच्छा, आमि ठाट्टा करब ना, एमनि स्थिर हय़े शुनब ये तोमार भ्रम हबे, आमि घुमिय़े पड़ेछि।"

किन्तु भूपति आमल पाइल ना-- देखिते देखिते खातापत्र नाना आबरण-आच्छादनेर मध्ये अन्तड़ित हइय़ा गेल।

नबम परिच्छेद

सकल कथा भूपति चारुके बलिते पारे नाइ। उमापद भूपतिर कागजखानिर कर्माध्यक्ष छिल। चाँदा आदाय़, छापाखाना ओ बाजारेर देना शोध, चाकरदेर बेतन देओय़ा, ए-समस्तइ उमापदर उपर भार छिल।

इतिमध्ये हठात् एकदिन कागजओय़ालार निकट हइते उकिलेर चिठि पाइय़ा भूपति आश्चर्य हइय़ा गेल। भूपतिर निकट हइते ताहादेर २७०० टाका पाओना जानाइय़ाछे। भूपति उमापदके डाकिय़ा कहिल, "ए की ब्यापार! ए टाका तो आमि तोमाके दिय़े दिय़েछि। कागजेर देना चार-पाँचशोर बेशि तो हबार कथा नय़।"

उमापद कहिल, "निश्चय़ एरा भुल करेछे।"

किन्तु, आर चापा रहिल ना। किछुकाल हइते उमापद एइरूप फाँकि दिय़ा आसितेछे। केबल कागज सम्बन्धे नहे, भूपतिर नामे उमापद बाजारे अनेक देना करिय़াछे। ग्रामे से ये एकटि पाका

बाड़ि निर्माण करितेछे ताहार मालमसलार कतक भूपतिर नामे लिखाइय़ाछे अधिकांशइ कागजेर टाका हइते शोध करिय़ाछे।

यखन नितान्तइ धरा पड़िल तखन से रुक्ष स्बरे कहिल, "आमि तो आर निरुद्देश हच्छि ने। काज करे आमि क्रमे क्रमे शोध देब-- तोमार सिकि पय़सार देना यदि बाकि थाके तबे आमार नाम उमापद नय़।"

ताहार नामेर ब्यत्यय़े भूपतिर कोनो सान्त्बना छिल ना। अर्थेर क्षतिते भूपति तत क्षुण्न हय़ नाइ, किन्तु अकस्मात् एइ बिश्बासघातकताय़ से येन घर हइते शून्येर मध्ये पा फेलिल।

सेइदिन से अकाले अन्तःपुरे गिय़ाछिल। पृथिबीते एकटा ये निश्चय़ बिश्बासेर स्थान आछे, सेइटे क्षणकालेर जन्य अनुभब करिय़ा आसिते ताहार हृदय़ ब्याकुल हइय़ाछिल। चारु तखन निजेर दुःखे सन्ध्यादीप निबाइय़ा जानलार काछे अन्धकारे बसिय़ा छिल।

उमापद परदिनइ मय़मनसिंह याइते प्रस्तुत। बाजारेर पाओनादाररा खबर पाइबार पूर्बेइ से सरिय़ा पड़ते चाय़। भूपति घृणापूर्बक उमापदर सहित कथा कहिल ना-- भूपतिर सेइ मौनाबस्था उमापद सौभाग्य बलिय़ा ज्ञान करिल।

अमल आसिय़ा जिज्ञासा करिल, "मन्दा-बोठान, ए की ब्यापार। जिनिसपत्र गोछाबार धुम ये?"

मन्दा। आर भाइ, येते तो हबेइ। चिरकाल कि थाकब।

अमल। याच्छ कोथाय़।

मन्दा। देशे।

अमल। केन। एखाने असुबिधाटा की हल।

मन्दा। असुबिधे आमार की बल। तोमादेर पाँचजनेर सङ्गे छिलुम, सुखेइ छिलुम। किन्तु अन्येर असुबिधे हते लागल ये। बलिय़ा चारुर घरेर दिके कटाक्ष करिल।

अमल गम्भीर हइय़ा चुप करिय़ा रहिल। मन्दा कहिल, "छि छि, की लज्जा। बाबु की मने करलेन।"

अमल ए कथा लइया आर अधिक आलोचना करिल ना। एटुकु स्थिर करिल, चारु ताहादेर सम्बन्धे दादार काछे एमन कथा बलियाछे याहा बलिबार नहे।

अमल बाड़ि हइते बाहिर हइया रास्ताय़ बेड़ाइते लागिल। ताहार इच्छा हइल ए बाड़िते आर फिरिया ना आसे। दादा यदि बोठानेर कथाय़ बिश्बास करिया ताहाके अपराधी मने करिया थाकेन, तबे मन्दा ये पथे गिय़ाछे ताहाकेओ सेइ पथे याइते हय़। मन्दाके बिदाय़ एक हिसाबे अमलेर प्रतिओ निर्बासनेर आदेश-- सेटा केबल मुख फुटिया बला हय़ नाइ मात्र। इहार परे कर्तब्य खुब सुस्पष्ट-- आर एकदण्डओ एखाने थाका नय़। किन्तु दादा ये ताहार सम्बन्धे कोनोप्रकार अन्याय़ धारणा मने मने पोषण करिय़ा राखिबेन से हइतेइ पारे ना। एतदिन तिनि अक्षुण्न बिश्बासे ताहाके घरे स्थान दिय़ा पालन करिय़ा आसितेछेन, से बिश्बासे ये अमल कोनो अंशे आघात देय़ नाइ से कथा दादाके ना बुझाइय़ा से केमन करिय़ा याइबे।

भूपति तखन आत्मीय़ेर कृतघ्नता, पाओनादारेर ताड़ना, उच्छृङ्खल हिसाबपत्र एबं शून्य तहबिल लइया माथाय़ हात दिय़ा भाबितेछिल। ताहार एइ शुष्क मनोदुःखेर केह दोसर छिल ना-- चित्तबेदना एबं ऋणेर सङ्गे एकला दाँड़ाइय़ा युद्ध करिबार जन्य भूपति प्रस्तुत हइतेछिल।

एमन समय़ अमल झड़ेर मतो घरेर मध्ये प्रबेश करिल। भूपति निजेर अगाध चिन्तार मध्ये हइते हठात् चमकिय़ा उठिय़ा चाहिल। कहिल, "खबर की अमल।" अकस्मात् मने हइल, अमल बुझि आर-एकटा की गुरुतर दुःसंबाद लइया आसिल।

अमल कहिल, "दादा, आमार उपरे तोमार कि कोनोरकम सन्देहेर कारण हय़ेछे।"

भूपति आश्चर्य हइय़ा कहिल, "तोमार उपरे सन्देह!" मने मने भाबिल, "संसार येरूप देखितेछि ताहाते कोनोदिन अमलकेओ सन्देश करिब आश्चर्य नाइ।"

अमल। बोठान कि आमार चरित्रसम्बन्धे तोमार काछे कोनोरकम दोषारोप करेछेन।

भूपति भाबिल, ओः,एइ ब्यापार। बाँचा गेल। स्नेहेर अभिमान। से मने करिय़ाछिल, सर्बनाशेर उपर बुझि आर-एकटा किछु सर्बनाश घटिय़ाछे, किन्तु गुरुतर संकटेर समय़ेओ एइ-सकल तुच्छ बिषय़े कर्णपात करिते हय़। संसार ए दिके साँकू नाड़ाइबे अथच सेइ साँकोर उपर दिय़ा ताहार शाकेर आँटिगुलो पार करिबार जन्य तागिद करितेओ छाड़िबे ना।

अन्य समय़ हइले भूपति अमलके परिहास करित, किन्त आज ताहार से प्रफुल्लता छिल ना। से बलिल, "पागल हय़ेछ नाकि।"

अमल आबार जिज्ञासा करिल, बोठान किछु बलेन नि?"

भूपति। तोमाके भालोबासेन बले यदि किछु बले थाकेन ताते राग कराबार कोनो कारण कनइ।

अमल। काजकर्मेर चेष्टाय़ एखन आमार अन्यत्र याओय़ा उचित।

भूपति धमक दिय़ा कहिल, "अमल, तुमि की छेलेमानुषि करछ तार ठिक नेइ। एखन पड़ाशुनो करो, काजकर्म परे हबे।"

अमल बिमर्षमुखे चलिय़ा आसिल, भूपति ताहार कागजेर ग्राहकदेर मूल्यप्राप्तिर तालिकार सहित तिन बत्सरेर जमाखरचेर हिसाब मिलाइते बसिय़ा गेल।

दशम परिच्छेद

अमल स्थिर करिल, बउठानेर सङ्गे मोकाबिला करिते हइबे, ए कथाटार शेष ना करिय़ा छाड़ा हइबे ना। बोठानके ये-सकल शक्त शक्त कथा शुनाइबे मने मने ताहा आबृत्ति करिते लागिल।

मन्दा चलिय़ा गेले चारु संकल्प करिल, अमलके से निजे हइते डाकिय़ा पाठाइय़ा ताहार रोषशान्ति करिबे। किन्तु एकटा लेखार उपलक्ष करिय़ा डाकिते हइबे। अमलेरइ एकटा लेखार अनुकरण करिय़ा "अमाबस्यार आलो' नामे से एकटा प्रबन्ध फाँदिय़ाछे। चारु एटुकु बुझिय़ाछे ये ताहार स्बाधीन छाँदेर लेखा अमल पछन्द करे ना।

पूर्णिमा ताहार समस्त आलोक प्रकाश करिय़ा फेले बलिय़ा चारु ताहार नूतन रचनाय़ पूर्णिमाके अत्यन्त भरत्सना करिय़ा लज्जा दितेछे। लिखितेछे-- अमाबस्यार अतलम्पर्श अन्धकारेर मध्ये षोलोकला चाँदेर समस्त आलोक स्तरे स्तरे आबद्ध हइय़ा आछे, ताहार एक रश्मिओ हाराइय़ा याय़ नाइ--ताइ पूर्णिमार उज्ज्बलता अपेक्षा अमाबस्यार कालिमा परिपूर्णतर-- इत्यादि। अमल निजेर सकल लेखाइ सकलेर काछे प्रकाश करे एबं चारु ताहा करे ना--पूर्णिमा-अमाबस्यार तुलनार मध्ये कि सेइ कथाटार आभास आछे।

ए दिके एइ परिबारेर तृतीय़ ब्यक्ति भूपति कोनो आसन्न ऋणेर तागिद हइते मुक्तिलाभेर जन्य ताहार परम बन्धु मतिलालेर काछे गिय़ाछिल।

मतिलालके संकटेर समय़ भूपति कय़ेक हाजार टाका धार दिय़ाछिल-- सेदिन अत्यन्त बिब्रत हइय़ा सेइ टाकाटा चाहिते गिय़ाछिल। मतिलाल स्नानेर पर गा खुलिय़ा पाखार हओय़ा लागाइतेछिल एबं एकटा काठेर बाक्सर उपर कागज मेलिय़ा अति छोटो अक्षरे सहस्र दुर्गानाम लिखितेछिल। भूपतिके देखिय़ा अत्यन्त हृयतार स्बरे कहिल, "एसो एसो-- आजकाल तो तोमार देखाइ पाबार जो नेइ।"

मतिलाल टाकार कथा शुनिय़ा आकाशपाताल चिन्ता करिय़ा कहिल, "कोन्टाकार कथा बलछ। एर मध्ये तोमार काछ थेके किछु निय़েछि नाकि।"

भूपति साल-तारिख स्मरण कराइय़ा दिले मतिलाल कहिल, "ओः, सेटा तो अनेकदिन हल तामादि हय़े गेछे।"

भूपतिर चक्षे ताहार चतुर्दिकेर चेहारा समस्त बदल हइय़ा गेल। संसारेर ये अंश हइते मुखोश खसिय़ा पड़िल से दिकटा देखिय़ा आतङ्के भूपतिर शरीर कन्टकित हइय़ा उठिल। हठात् बन्या आसिय़ा पड़िले भीत ब्यक्ति येखाने सकलेर चेय़े उच्च चूड़ा देखे सेइखाने येमन छुटिय़ा याय़, संशय़াक्रान्त बहिःसंसार हइते भूपति तेमनि बेगे अन्तःपुरे प्रबेश करिल, मने मने कहिल, "आर याइ होक, चारु तो आमाके बञ्चना करिबे ना।'

चारु तखन खाटे बसिय़ा कोलेर उपर बालिश एबं बालिशेर उपर खाता राखिय़ा झुँकिय़ा पड़िय़ा एकमने लिखितेछिल। भूपति यखन नितान्त ताहार पाशे आसिय़ा दाँड़াइल तखनइ ताहार चेतना हइल, ताड़াताड़ि ताहार खाताटा पाय़েर नीचे चापिय़ा बसिल।

मने यखन बेदना थाके तखन अल्प आघातेइ गुरुतर ब्यथा बोध हय़। चारु एमन अनाबश्यक सत्बरतार सहित ताहार लेखा गोपन करिल देखिय़ा भूपतिर मने बाजिल।

भूपति धीरे धीरे खाटेर उपर चारुर पाशे बसिल। चारु ताहार रचनास्रोते अनपेक्षित बाधा पाइय़ा एबं भूपतिर काछे हठात् खाता लुकाइबार ब्यस्ततताय़ अप्रतिभ हइय़ा कोनो कथाइ जोगाइय़ा उठिते पारिल ना।

सेदिन भूपतिर निजेर किछु दिबार बा कहिबार छिल ना। से रिक्तहस्ते चारुर निकटे प्रार्थी हइय़ा आसिय़াछिल। चारुर काछ हइते आशङ्काधर्मी भालोबासार एकटा-कोनो प्रश्न, एकटा-किछु

आदर पाइलेइ ताहार क्षत-यन्त्रणाय़ औषध पड़ित। किन्तु "ह्यादे लक्ष्णी हैल लक्ष्णीछाड़ा', एक मुहूर्तेर प्रय़ोजने प्रीतिभाण्डारेर चाबि चारुयेन कोनोखाने खुँजिय़ा पाइल ना। उभय़ेर सुकठिन मौने घरेर नीरबता अत्यन्त निबिड़ हइय़ा आसिल।

खानिकक्षण नितान्त चुपचाप थाकिय़ा भूपति निश्बास फेलिय़ा खाट छाड़िय़ा उठिल एबं धीरे धीरे बाहिरे चलिय़ा आसिल।

सेइ समय़ अमल बिस्तर शक्त शक्त कथा मनेर मध्ये बोझाइ करिय़ा लइय़ा चारुर घरे द्रुतपदे आसितेछिल, पथेर मध्ये अमल भूपतिर अत्यन्त शुष्क बिबर्ण मुख देखिय़ा उद्बिग्न हइय़ा थामिल, जिज्ञासा करिल, "दादा, तोमार असुख करेछे?"

अमलेर स्निग्धस्बर शुनिबामात्र हठात् भूपतिर समस्त हृदय़ ताहार अश्रुराशि लइय़ा बुकेर मध्ये येन फुलिय़ा उठिल। किछुक्षण कोनो कथा बाहिर हइल ना। सबले आत्मसम्बरण करिय़ा भूपति आर्द्रस्बरे कहिल, "किछु हय़ नि, अमल। एबारे कागजे तोमार कोनो लेखा बेरच्छे कि।"

अमल शक्त शक्त कथा याहा सञ्चय़ करिय़ाछिल ताहा कोथाय़ गेल। ताड़ाताड़ि चारुर घरे आसिय़ा जिज्ञासा करिल, "बउठान, दादार की हय़ेछे बलो देखि।"

चारु कहिल, "कइ, ता तो किछु बुझते पारलुम ना। अन्य कागजे बोध हय़ और कागजके गाल दिय़े थाकबे।"

अमल माथा नाड़िल।

ना डाकितेइ अमल आसिल एबं सहजभाबे कथाबार्ता आरम्भ करिय़ा दिल देखिय़ा चारु अत्यन्त आराम पाइल। एकेबारेइ लेखार कथा पाड़िल-- कहिल, "आज आमि "अमाबस्यार आलो' बले एकटा लेखा लिखछिलुम; आर एकटु हलेइ तिनि सेटा देखे फेलेछिलेन।"

चारु निश्चय़ स्थिर करिय़ाछिल, ताहार नूतन लेखाटा देखिबार जन्य अमल पीड़ापीड़ि करिबे। सेइ अभिप्राय़े खाताखाना एकटु नाड़ाचाड़ाओ करिल। किन्तु, अमल एकबार तीब्रदृष्टिते किछुक्षण चारुर मुखेर दिके चाहिल-- की बुझिल, की भाबिल जानि ना। चकित हइय़ा उठिय़ा पड़िल। पर्बतपथे चलिते चलिते हठात् एक समय़े मेघेर कुय़ाशा काटिबामात्र पथिक येन चमकिय़ा देखिल, से सहस्र हस्त गभीर गह्बरेर मध्ये पा बाड़ाइते याइतेछिल। अमल कोनो कथा ना बलिय़ा एकेबारे घर हइते बाहिर हइय़ा गेल।

चारु अमलेर एइ अभूतपूर्ब ब्यबहारेर कोनो तात्पर्य बुझिते पारिल ना।

एकादश परिच्छेद

परदिन भूपति आबार असमय़े शय़नघरे आसिय़ा चारुके डाकाइय़ा आनाइल। कहिल, "चारु, अमलेर बेश एकटि भालो बिबाहेर प्रस्ताब एसेछे।"

चारु अन्यमनस्क छिल। कहिल, "भालो की एसेछे।"

भूपति। बिय़ेर सम्बन्ध।

चारु। केन, आमाके कि पछन्द हल ना।

भूपति उच्चैःस्बरे हासिय़ा उठिल। कहिल, "तोमाके पछन्द हल कि ना से कथा एखनो अमलके जिज्ञासा करा हय़ नि। यदि बा हय़े थाके आमार तो एकटा छोटोखाटो दाबि आछे, से आमि फस्करे छाड़छि ने।"

चारु। आः, की बकछ तार ठिक नेइ। तुमि ये बलले, तोमार बिय़ेर सम्बन्ध एसेछे। चारुर मुख लाल हइय़ा उठिल।

भूपति। ता हले कि छुटे तोमाके खबर दिते आसतुम? बकशिश पाबार तो आशा छिल ना।

चारु। अमलेर सम्बन्ध एसेछे? बेश तो। ता हले आर देरि केन।

भूपति। बर्धमानेर उकिल रघुनाथबाबु ताँर मेय़ेर सङ्गे बिबाह दिय़े अमलके बिलेत पाठाते चान।

चारु बिस्मित हइय़ा जिज्ञासा करिल, "बिलेत?"

भूपति। हाँ,बिलेत।

चारु। अमल बिलेत याबे? बेश मजा तो। बेश हय़ेछे, भालै हय़ेछे ता तुमि ताके एकबार बले देखो।

भूपति। आमि बलबार आगे तुमि ताके एकबार डेके बुझिय़े बलले भालो हय़ ना?

चारु। आमि तो तिन हाजार बार बलेछि। से आमार कथा राखे ना। आमि ताके बलते पारब ना।

भूपति। तोमार कि मने हय़, से करबे ना?

चारु। आरो तो अनेकबार चेष्टा देखा गेछे, कोनोमते तो राजि हय़ नि।

भूपति। किन्तु एबारकार ए प्रस्ताबटा तार पक्षे छाड़ा उचित हबे ना। आमार अनेक देना हय़े गेछे, अमलके आमि तो आर सेरकम करे आश्रय़ दिते पारब ना।

भूपति अमलके डाकिय़ा पाठाइल। अमल आसिले ताहाके बलिल, "बर्धमानेर उकिल रघुनाथबाबुर मेय़ेर सङ्गे तोमार बिय़ेर प्रस्ताब एसेछे। ताँर इच्छे बिबाह दिय़े तोमाके बिलेत पाठिय़े देबेन। तोमार की मत।"

अमल कहिल, "तोमार यदि अनुमति थाके, आमार एते कोनो अमत नेइ।"

अमलेर कथा शुनिय़ा उभय़े आश्चर्य हइय़ा गेल। से ये बलिबामात्रइ राजि हइबे, ए केह मने करे नाइ।

चारु तीब्रस्बरे ठाट्टा करिय़ा कहिल, "दादार अनुमति थाकलेइ उनि मत देबेन; की आमार कथार बाध्य छोटो भाइ। दादार 'परे भक्ति एतदिन कोथाय़ छिल, ठाकुरपो?"

अमल उत्तर ना दिय़ा एकटुखानि हासिबार चेष्टा करिल।

अमलेर निरुत्तरे चारु येन ताहाके चेताइय़ा तुलिबार जन्य द्विगुणतर झाँजेर सङ्गे बलिल, "तार चेय़े बलो-ना केन, निजेर इच्छे गेछे। एतदिन भान करे थाकबार की दरकार छिल ये बिय़े करते चाओ ना? पेटे खिदे मुखे लाज!"

भूपति उपहास करिय़ा कहिल, "अमल तोमार खातिरेइ एतदिन खिदे चेपे रेखेछिल, पाछे भाजेर कथा शुने तोमार हिंसा हय़।"

चारु एइ कथाय़ लाल हइय़ा उठिय़ा कोलाहल करिय़ा बलिल, "हिंसे! ता बैकि! कखख्नो आमार हिंसे हय़ ना। ओरकम करे बला तोमार भारि अन्याय़।"

भूपति। ऐ देखो। निजेर स्त्रीके ठाट्टाओ करते पारब ना।

चारु। ना, ओरकम ठाट्टा आमार भालो लागे ना।

भूपति। आच्छा, गुरुतर अपराध करेछि। माप करो। या होक, बिय़ेर प्रस्ताबटा ता हले स्थिर?

अमल कहिल, "हाँ।"

चारु। मेय़েटि भालो कि मन्द ताओ बुझि एकबार देखते याबारओ तर सइल ना। तोमार ये एमन दशा हय़े एसेछे ता तो एकटु आभासेओ प्रकाश कर नि।

भूपति। अमल, मेय़े देखते चाओ तो तार बन्दोबस्त करि। खबर निय़েछि मेय़েटि सुन्दरी।

अमल। ना, देखबार दरकार देखि ने।

चारु। ओर कथा शोन केन। से कि हय़। कने ना देखे बिय़े हबे? ओ ना देखते चाय़ आमरा तो देखे नेब।

अमल। ना दादा, ऐ निय़े मिथ्ये देरि करबार दरकार देखि ने।

चारु। काज नेइ बापु-- देरि हले बुक फेटे याबे। तुमि टोपर माथाय़ दिय़े एखनइ बेरिय़े पड़ो। की जानि, तोमार सात राजार धन मानिकटिके यदि आर केउ केड़े निय़े याय़।

अमलके चारु कोनो ठाट्टातेइ किछुमात्र बिचलित करिते पारिल ना।

चारु। बिलेत पालाबार जन्ये तोमार मनटा बुझि दौड़च्छे? केन, एखाने आमरा तोमाके मारछिलुम ना धरछिलुम। ह्याट कोट परे साहेब ना साजले एखानकार छेलेदेर मन ओठे ना। ठाकुरपो, बिलेत थेके फिरे एसे आमादेर मतो काला आदमिदेर चिनते पारबे तो?

अमल कहिल, "ता हले आर बिलेत याओय़ा की करते।"

भूपति हासिय़ा कहिल, "कालो रूप भोलबार जन्येइ तो सात समुद्र पेरोनो। ता, भय़ की चारु, आमरा रइलुम, कालोर भक्तेर अभाब हबे ना।"

भूपति खुशि हइय़ा तखनइ बर्धमाने चिठि लिखिय़ा पाठाइल। बिबाहेर दिन स्थिर हइय़ा गेल।

द्वादश परिच्छेद

इतिमध्ये कागजखाना तुलिय़ा दिते हइल। भूपति खरच आर जोगाइय़ा उठिते पारिल ना। लोकसाधारण-नामक एकटा बिपुल निर्मम पदार्थेर ये साधनाय़ भूपति दीर्घकाल दिनरात्रि एकान्त मने नियुक्त छिल सेटा एक मुहूर्ते बिसर्जन दिते हइल। भूपतिर जीबने समस्त चेष्टा ये अभ्यस्त पथे गत बारो बत्सर अबिच्छेदे चलिय़ा आसितेछे सेटा हठात् एक जाय़गाय़ येन जलेर माझखाने आसिय़ा पड़िल। इहार जन्य भूपति किछुमात्र प्रस्तुत छिल ना। अकस्मात्-बाधाप्राप्त ताहार एतदिनकार समस्त उद्यमके से कोथाय़ फिराइय़ा लइय़ा याइबे। ताहारा येन उपबासी अनाथ शिशुसन्तानदेर मतो भूपतिर मुखेर दिके चाहिल, भूपति ताहादिगके आपन अन्तःपुरे करुणामय़ी शुश्रूषापराय़णा नारीर काछे आनिय़ा दाँड़ कराइल।

नारी तखन की भाबितेछिल। से मने मने बलितेछिल, "ए की आश्चर्य, अमलेर बिबाह हइबे से तो खुब भालै। किन्तु एतकाल परे आमादेर छाड़िय़ा परेर घरे बिबाह करिय़ा बिलात चलिय़ा याइबे, इहाते ताहार मने एकबारओ एकटुखानिर जन्य द्विधाओ जन्मिल ना? एतदिन धरिय़ा ताहाके ये आमरा एत यत्न करिय़ा राखिलाम,आर येमनि बिदाय़ लइबार एकटुखानि फाँक पाइल अमनि कोमर बाँधिय़ा प्रस्तुत हइल, येन एतदिन सुयोगेर अपेक्षा करितेछिल। अथच मुखे कतइ मिष्ट, कतइ भालोबासा। मानुषके चिनिबार जो नाइ। के जानित, ये लोक एत लिखिते पारे ताहार हृदय़ किछुमात्र नाइ।'

निजेर हृदय़प्राचुर्येर सहित तुलना करिय़ा चारु अमलेर शून्य हृदय़के अत्यन्त अबज्ञा करिते अनेक चेष्टा करिल किन्तु पारिल ना। भितरे भितरे निय़त एकटा बेदनार उद्बेग तप्त शूलेर मतो ताहार अभिमानके ठेलिय़ा ठेलिय़ा तुलिते लागिल-- "अमल आज बादे काल चलिय़ा याइबे, तबु ए कय़दिन ताहार देखा नाइ। आमादेर मध्ये ये परस्पर एकटा मनान्तर हइय़ाछे सेटा मिटाइय़ा लइबार आर अबसरओ हइल ना।' चारु प्रतिक्षणे मने करे अमल आपनि आसिबे-- ताहादेर

एतदिनकार खेलाधुला एमन करिया भाङिबे ना, किन्तु अमल आर आसेइ ना। अबशेषे यखन यात्रार दिन अत्यन्त निकटबर्ती हइया आसिल तखन चारु निजेइ अमलके डाकिया पाठाइल।

अमल बलिल, "आर एकटु परे याच्छि।" चारु ताहादेर सेइ बारान्दार चौकिटाते गिया बसिल। सकालबेला हइते घन मेघ करिया गुमट हइया आछे-- चारु ताहार खोला चुल एलो करिया माथाय जड़ाइया एकटा हातपाखा लइया क्लान्त देहे अल्प अल्प बातास करिते लागिल।

अत्यन्त देरि हइल। क्रमे ताहार हातपाखा आर चलिल ना। राग दुःख अधैर्य ताहार बुकेर भितरे फुटिया उठिल। मने मने बलिल-- नाइ आसिल अमल, तातेइ बा की। किन्तु तबु पदशब्द मात्रेइ ताहार मन द्वारेर दिके छुटिया याइते लागिल।

दूर गिर्जाय एगारोटा बाजिया गेल। स्नानान्ते एखनइ भूपति खाइते आसिबे। एखनो आधघन्टा समय आछे, एखनो अमल यदि आसे। येमन करिया होक, ताहादेर कयदिनकार नीरब झगड़ा आज मिटाइया फेलितेइ हइबे-- अमलके एमनभाबे बिदाय देओया याइते पारे ना। एइ समबयसि देओर-भाजेर मध्ये ये चिरन्तन मधुर सम्बन्धटुकु आछे-- अनेक भाब, आड़ि, अनेक स्नेहेर दौरात्म्य, अनेक बिश्रब्ध सुखालोचनाय बिजड़ित एकटि चिरच्छायामय लताबितान-- अमल से कि आज धुलाय लुटाइया दिया बहुदिनेर जन्य बहुदूरे चलिया याइबे। एकटु परिताप हइबे ना? ताहार तले की शेष जलओ सिञ्चन करिया याइबे ना-- ताहादेर अनेकदिनेर देओर-भाज सम्बन्धेर शेष अश्रुजल!

आधघन्टा प्राय अतीत हय। एलो खोँपा खुलिया खानिकटा चुलेर गुच्छ चारुद्रुतबेगे आङुले जड़ाइते एबं खुलिते लागिल। अश्रुसम्बरण करा आर याय ना। चाकर आसिया कहिल, "माठाकरुन, बाबुर जन्ये डाब बेर करे दिते हबे।"

चारु आँचल हइते भाँड़ारेर चाबि खुलिया झन्करिया चाकरेर पायेर काछे फेलिया दिल-- से आश्चर्य हइया चाबि लइया चलिया गेल।

चारुर बुकेर काछ हइते की एकटा ठेलिया कण्ठेर काछे उठिया आसिते लागिल।

यथासमये भूपति सहास्यमुखे खाइते आसिल। चारु पाखा हाते आहारस्थाने उपस्थित हइया देखिल, अमल भूपतिर सङ्गे आसियाछे। चारु ताहार मुखेर दिके चाहिल ना।

अमल जिज्ञासा करिल, "बोठान, आमाके डाकछ?"

चारु कहिल, "ना, एखन आर दरकार नेइ।"

अमल। ता हले आमि याइ, आमार आबार अनेक गोछाबार आछे।

चारु तखन दीप्तचक्षे एकबार अमलेर मुखेर दिके चाहिल; कहिल, "याओ।"

अमल चारुर मुखेर दिके एकबार चाहिय़ा चलिय़ा गेल।

आहारान्ते भूपति किछुक्षण चारुर काछे बसिय़ा थाके। आज देनापाओना-हिसाबपत्रेर हाङ्गामे भूपति अत्यन्त ब्यस्त-- ताइ आज अन्तःपुरे बेशिक्षण थाकिते पारिबे ना बलिय़ा किछु क्षुण्न हइय़ा कहिल, "आज आर बेशिक्षण बसते पारछि ने-- आज अनेक झञ्झाट।"

चारु बलिल, "ता याओ-ना।"

भूपति भाबिल, चारु अभिमान करिल। बलिल, "ताइ बले ये एखनइ येते हबे ता नय़; एकटु जिरिय़े येते हबे।" बलिय़ा बसिल। देखिल चारु बिमर्ष हइय़ा आछे। भूपति अनुतप्त चित्ते अनेकक्षण बसिय़ा रहिल, किन्तु कोनोमतेइ कथा जमाइते पारिल ना। अनेकक्षण कथोपकथनेर बृथा चेष्टा करिय़ा भूपति कहिल, "अमल तो काल चले याच्छे, किछुदिन तोमार बोध हय़ खुब एकला बोध हबे।"

चारु ताहार कोनो उत्तर ना दिय़ा येन की एकटा आनिते चट्करिय़ा अन्य घरे चलिय़ा गेल। भूपति किय़त्क्षण अपेक्षा करिय़ा बाहिरे प्रस्थान करिल।

चारु आज अमलेर मुखेर दिके चाहिय़ा लक्ष करिय़ाछिल अमल एइ कय़दिनेइ अत्यन्त रोगा हइय़ा गेछे-- ताहार मुखेर तरुणतार सेइ स्फूर्ति एकेबारे नाइ। इहाते चारु सुखओ पाइल बेदनाओ बोध करिल। आसन्न बिच्छेदइ ये अमलके क्लिष्ट करितेछे, चारुर ताहाते सन्देह रहिल ना-- किन्तु तबु अमलेर एमन ब्यबहारकेन। केन से दूरे दूरे पालाइय़ा बेड़ाइतेछे। बिदाय़काले केन से इच्छापूर्बक एमन बिरोधतिक्त करिय़ा तुलितेछे।

बिछानाय़ शुइय़ा भाबिते भाबिते से हठात् चमकिय़ा उठिय़ा बसिल। हठात् मन्दार कथा मने पड़िल। यदि एमन हय़, अमल मन्दाके भालोबासे। मन्दा चलिय़ा गेछे बलिय़াइ यदि अमल एमन करिय़ा-- छि! अमलेर मन कि एमन हइबे। एत क्षुद्र? एमन कलुषित? बिबाहित रमणीर प्रति ताहार मन याइबे? असम्भब। सन्देहके एकान्त चेष्टाय़ दूर करिय़ा दिते चाहिल किन्तु सन्देह ताहाके सबले दंशन करिय़ा रहिल।

एमनि करिया़ बिदाय़काल आसिल। मेघ परिष्कार हइल ना। अमल आसिया़ कम्पितकण्ठे कहिल, "बोठान, आमार याबार समय़ हय़ेछे। तुमि एखन थेके दादाके देखो। ताँर बड़ो संकटेर अबस्था-- तुमि छाड़ा ताँर आर सान्त्बनार कोनो पथ नेइ।"

अमल भूपतिर बिषण्न म्लान भाब देखिया़ सन्धान द्वारा ताहार दुर्गतिर कथा जानिते पारिया़छिल। भूपति ये किरूप निःशब्दे आपन दुःखदुर्दशार सहित एकला लड़ाइ करितेछे, काहारो काछे साहाय्य बा सान्त्बना पाय़ नाइ, अथच आपन आश्रित पालित आत्मीय़स्बजनदिगके एइ प्रलय़संकटे बिचलित हइते देय़ नाइ, इहा से चिन्ता करिया़ चुप करिया़ रहिल। तार परे से चारुर कथा भाबिल, निजेर कथा भाबिल, कर्णमूल लोहित हइया़ उठिल, सबेगे बलिल, "चुलोय़ याक आषाढ़ेर चाँद आर अमाबस्यार आलो। आमि ब्यारिस्टार हय़े एसे दादाके यदि साहाय्य करते पारि तबेइ पुरुषमानुष।'

गत रात्रि समस्त रात जागिया़ चारु भाबिया़ राखिया़छिल अमलके बिदाय़काले की कथा बलिबे--सहास्य अभिमान एबं प्रफुल्ल औदासीन्येर द्वारा माजिया़ माजिया़ सेइ कथागुलिके से मने मने उज्ज्बल ओ शानित करिया़ तुलिया़छिल। किन्तु बिदाय़ देबार समय़ चारुर मुखे कोनो कथाइ बाहिर हइल ना। से केबल बलिल, "चिठि लिखबे तो, अमल?"

अमल भूमिते माथा राखिया़ प्रणाम करिल, चारु छुटिया़ शय़नघरे गिया़ द्वार बन्ध करिया़ दिल।

त्रय़ोदश परिच्छेद

भूपति बर्धमाने गिया़ अमलेर बिबाह-अन्ते ताहाके बिलाते रओना करिया़ घरे फिरिया़ आसिल।

नाना दिक हइते घा खाइया़ बिश्बासपराय़ण भूपतिर मने बहिःसंसारेर प्रति एकटा बैराग्येर भाब आसिया़छिल। सभासमिति मेलामेशा किछुइ ताहार भालो लागित ना। मने हइल, "एइ-सब लइया़ आमि एतदिन केबल निजेकेइ फाँकि दिलाम-- जीबनेर सुखेर दिन बृथा बहिया़ गेल एबं सारभाग आबर्जनाकुण्डे फेलिलाम।'

भूपति मने मने कहिल, "याक, कागजटा गेल, भालै हइल। मुक्तिलाभ करिलाम।' सन्ध्यार समय़ आँधारेर सूत्रपात देखिलेइ पाखि येमन करिय़ा नीड़े फिरिय़ा आसे, भूपति सेइरूप ताहार दीर्घदिनेर सञ्चरणक्षेत्र परित्याग करिय़ा अन्तःपुरे चारुर काछे चलिय़ा आसिल। मने मने स्थिर करिल, "बास्, एखन आर-कोथाओ नय़; एइखानेइ आमार स्थिति! ये कागजेर जाहाजटा लइय़ा समस्तदिन खेला करिताम सेटा डुबिल, एखन घरे चलि।'

बोध करि भूपतिर एकटा साधारण संस्कार छिल, स्त्रीर उपर अधिकार काहाकेओ अर्जन करिते हय़ ना, स्त्री ध्रुबतारार मतो निजेर आलो निजेइ ज्बालाइय़ा राखे-- हाओय़ाय़ नेबे ना, तेलेर अपेक्षा राखे ना। बाहिरे यखन भाङचुर आरम्भ हइल तखन अन्तःपुरे कोनो खिलाने फाटल धरिय़ाछे कि ना ताहा एकबार परख करिय़ा देखार कथाओ भूपतिर मने स्थान पाय़ नाइ।

भूपति सन्ध्यार समय़ बर्धमान हइते बाड़ि फिरिय़ा आसिल। ताड़ाताड़ि मुखहात धुइय़ा सकाल सकाल खाइल। अमलेर बिबाह ओ बिलातयात्रार आद्योपान्त बिबरण शुनिबार जन्य स्बभाबतइ चारु एकान्त उत्सुक हइय़ा आछे स्थिर करिय़ा भूपति आज किछुमात्र बिलम्ब करिल ना। भूपति शोबार घरे बिछानाय़ गिय़ा शुइय़ा गुड़गुड़िर सुदीर्घ नल टानिते लागिल। चारु एखनो अनुपस्थित, बोध करि गृहकार्य करितेछे। तामाक पुड़िय़ा श्रान्त भूपतिर घुम आसिते लागिल। क्षणे क्षणे घुमेर घोर भाङिय़ा चमकिय़ा जागिय़ा उठिय़ा से भाबिते लागिल, एखनो चारु आसितेछे ना केन। अबशेषे भूपति थाकिते ना पारिय़ा चारुके डाकिय़ा पाठाइल। भूपति जिज्ञासा करिल, "चारु, आज ये एत देरि करले?"

चारु ताहार जबाबदिहि ना करिय़ा कहिल, "हाँ, आज देरि हइय़ा गेल।"

चारुर आग्रहपूर्ण प्रश्नेर जन्य भूपति अपेक्षा करिय़ा रहिल; चारु कोनो प्रश्नकरिल ना। इहाते भूपति किछु क्षुण्न हइल। तबे कि चारु अमलके भालोबासे ना। अमल यतदिन उपस्थित छिल ततदिन चारु ताहाके लइय़ा आमोद-आह्लाद करिल, आर येइ चलिय़ा गेल अमनि ताहार सम्बन्धे उदासीन! एइरूप बिसदृश ब्यबहारे भूपतिर मने खटका लागिल, से भाबिते लागिल-- तबे कि चारुर हृदय़ेर गभीरता नाइ। केबल से आमोद करितेइ जाने, भालोबासिते पारे ना? मेय़ेमानुषेर पक्षे एरूप निरासक्त भाब तो भालो नय़।

चारु ओ अमलेर सखित्बे भूपति आनन्द बोध करित। एइ दुइजनेर छेलेमानुषि आड़ि ओ भाब, खेला ओ मन्त्रणा ताहार काछे सुमिष्ट कौतुकाबह छिल; अमलके चारु सर्बदा ये यत्न आदर करित ताहाते चारुर सुकोमल हृदय़ालुतार परिचय़ पाइय़ा भूपति मने मने खुशि हइत। आज आश्चर्य

हइया भाबिते लागिल, से समस्तइ कि भासा-भासा, हृदयेर मध्ये ताहार कोनो भित्ति छिल ना? भूपति भाबिल, चारुर हृदय़ यदि ना थाके तबे कोथाय़ भूपति आश्रय़ पाइबे।

अल्पे अल्पे परीक्षा करिबार जन्य भूपति कथा पाड़िल, "चारु, तुमि भालो छिले तो? तोमार शरीर खाराप नेइ?"

चारु संक्षेपे उत्तर करिल, "भालै आछि।"

भूपति। अमलेर तो बिय़े चुके गेल।

एइ बलिय़ा भूपति चुप करिल; चारु तत्कालोचित एकटा कोनो संगत कथा बलिते चेष्टा करिल, कोनो कथाइ बाहिर हइल ना; से आड़ष्ट हइय़ा रहिल।

भूपति स्बभाबतइ कखनो किछु लक्ष्य करिय़ा देखे ना-- किन्तु अमलेर बिदाय़शोक ताहार निजेर मने लागिय़ा आछे बलिय़ाइ चारुर औदासीन्य ताहाके आघात करिल। ताहार इच्छा छिल, समबेदनाय़ ब्यथित चारुर सङ्गे अमलेर कथा आलोचना करिय़ा से हृदय़भार लाघब करिबे।

भूपति। मेय़েटिके देखते बेश।-- चारु, घुमोच्छ?

चारु कहिल, "ना।"

भूपति। बेचारा अमल एकला चले गेल। यखन ताके गाड़िते उठिय़े दिलुम, से छेलेमानुषेर मतो काँदते लागल-- देखे एइ बुड़ोबय़से आमि आर चोखेर जल राखते पारलुम ना। गाड़िते दुजन साहेब छिल, पुरुषमानुषेर कान्ना देखे तादेर भारि आमोद बोध हल।

निर्बाणदीप शय़नघरे बिछानार अन्धकारेर मध्ये चारु प्रथमे पाश फिरिय़ा शुइल,ताहार पर हठात् ताड़ाताड़ि बिछाना छाड़िय़ा चलिय़ा गेल। भूपति चकित हइय़ा जिज्ञासा करिल, "चारु, असुख करेछे?"

कोनो उत्तर ना पाइय़ा सेओ उठिल। पाशे बारान्दा हइते चापा कान्नार शब्द शुनिते पाइय़ा त्रस्तपदे गिय़ा देखिल, चारु माटिते पड़िय़ा उपुड़ हइय़ा कान्ना रोध करिबार चेष्टा करितेछे।

एरूप दुरन्त शोकोच्छबास देखिय़ा भूपति आश्चर्य हइय़ा गेल। भाबिल, चारुके की भुल बुझिय़ाछिलाम। चारुर स्बभाब एतइ चापा ये, आमार काछेओ हृदयेर कोनो बेदना प्रकाश करिते चाहे ना। याहादेर प्रकृति एइरूप ताहादेर भालोबासा सुगभीर एबं ताहादेर बेदनाओ अत्यन्त बेशि।

चारुर प्रेम साधारण स्त्रीलोकदेर न्याय़ बाहिर हइते तेमन परिदृश्यमान नहे, भूपति ताहा मने मने ठाहर करिय़ा देखिल। भूपति चारुर भालोबासार उच्छबास कखनो देखे नाइ; आज बिशेष करिय़ा बुझिल, ताहार कारण अन्तरेर दिकेइ चारुर भालोबासार गोपन प्रसार। भूपति निजेओ बाहिरे प्रकाश करते अपटु; चारुर प्रकृतितेओ हृदय़ाबेगेर सुगभीर अन्तःशीलतार परिचय़ पाइय़ा से एकटा तृप्ति अनुभब करिल।

भूपति तखन चारुर पाशे बसिय़ा कोनो कथा ना बलिय़ा धीरे धीरे ताहार गाय़े हात बुलाइय़ा दिते लागिल। की करिय़ा सान्त्बना करिते हय़ भूपतिर ताहा जाना छिल ना-- इहा से बुझिल ना, शोकके यखन केह अन्धकारे कण्ठ चापिय़ा हत्या करिते चाहे तखन साक्षी बसिय़ा थाकिले भालो लागे ना।

चतुर्दश परिच्छेद

भूपति यखन ताहार खबरेर कागज हइते अबसर लइल तखन निजेर भबिष्यतेर एकटा छबि निजेर मनेर मध्ये आँकिय़ा लइय़ाछिल। प्रतिज्ञा करिय़ाछिल, कोनो प्रकार दुराशा-दुश्चेष्टाय़ याइबे ना, चारुके लइय़ा पड़ाशुना भालोबासा एबं प्रतिदिनेर छोटोखाटो गाड़स्थ्य कर्तब्य पालन करिय़ा चलिबे। मने करिय़ाछिल, ये-सकल घोरो सुख सब चेय़े सुलभ अथच सुन्दर, सर्बदाइ नाड़ाचाड़ार योग्य अथच पबित्र निर्मल, सेइ सहजलभ्य सुखगुलिर द्वारा ताहार जीबनेर गृहकोणटिते सन्ध्याप्रदीप ज्बालाइय़ा निभृत शान्तिर अबतारणा करिबे। हासि गल्प परिहास, परस्परेर मनोरञ्जनेर जन्य प्रत्यह छोटोखाटो आय़ोजन, इहाते अधिक चेष्टा आबश्यक हय़ ना अथच सुख अपर्याप्त हइय़ा उठे।

कार्यकाले देखिल, सहज सुख सहज नहे। याहा मूल्य दिय़ा किनिते हय़ ना ताहा यदि आपनि हातेर काछे ना पाओय़ा याय़ तबे आर कोनोमतेइ कोथाओ खुँजिय़ा पाइबार उपाय़ थाके ना।

भूपति कोनोमतेइ चारुर सङ्गे बेश करिय़ा जमाइय़ा लइते पारिल ना। इहाते से निजेकेइ दोष दिल। भाबिल, "बारो बत्सर केबल खबरेर कागज लिखिय़ा, स्त्रीर सङ्गे की करिय़ा गल्प करिते हय़ से बिद्या एकेबारे खोय़ाइय़ाछि।' सन्ध्यादीप ज्बालितेइ भूपति आग्रहेर सहित घरे याय़-- से दुइ-एकटा कथा बले, चारु दुइ-एकटा कथा बले, तार परे की बलिबे भूपति कोनोमतेइ भाबिय़ा पाय़ ना।

निजेर एइ अक्षमताय़ स्त्रीर काछे से लज्जा बोध करिते थाके। स्त्रीके लइय़ा गल्प करा से एतइ सहज मने करिय़ाछिल अथच मूढ़ेर निकट इहा एतइ शक्त! सभास्थले बक्तृता करा इहार चेय़े सहज।

ये सन्ध्याबेलाके भूपति हास्ये कौतुके प्रणय़े रमणीय़ करिय़ा तुलिबे कल्पना करिय़ाछिल, सेइ सन्ध्याबेला काटानो ताहादेर पक्षे समस्यार स्बरूप हइय़ा उठिल। किछुक्षण चेष्टापूर्ण मौनेर पर भूपति मने करे "उठिय़ा याइ'-- किन्तु उठिय़ा गेले चारु की मने करिबे एइ भाबिय़ा उठितेओ पारे ना; बले, "चारु, तास खेलबे?" चारु अन्य कोनो गति ना देखिय़ा बले, आच्छा। बलिय़ा अनिच्छाक्रमे तास पाड़िय़ा आने, नितान्त भुल करिय़ा अनाय़ासेइ हारिय़ा याय़-- से खेलाय़ कोनो सुख थाके ना।

भूपति अनेक भाबिय़ा एकदिन चारुके जिज्ञासा करिल, "चारु, मन्दाके आनिय़ा निले हय़ ना? तुमि नितान्त एकला पड़ेछ।"

चारु मन्दार नाम शुनिय़াइ ज्बलिय़ा उठिल। बलिल, "ना, मन्दाके आमार दरकार नेइ।"

भूपति हासिल। मने मने खुशि हइल। साध्बीरा येखाने सतीधर्मेर किछुमात्र ब्यतिक्रम देखे सेखाने धैर्य राखिते पारे ना।

बिद्वेषेर प्रथम धाक्का सामलाइय़ा चारु भाबिल, मन्दा थाकिले से हय़तो भूपतिके अनेकटा आमोदे राखिते पारिबे। भूपति ताहार निकट हइते ये मनेर सुख चाय़ से ताहा कोनोमते दिते पारितेछे ना, इहा चारु अनुभब करिय़ा पीड़ा बोध करितेछिल। भूपति जगत्संसारेर आर-समस्त छाड़िय़ा एकमात्र चारुर निकट हइतेइ ताहार जीबनेर समस्त आनन्द आकर्षण करिय़ा लइते चेष्टा करितेछे, एइ एकाग्र चेष्टा देखिय़ा ओ निजेर अन्तरेर दैन्य उपलब्धि करिय़ा चारु भीत हइय़ापड़िय़ाछिल। एमन करिय़ा कतदिन किरूपे चलिबे। भूपति आर किछु अबलम्बन करे ना केन। आर-एकटा खबरेर कागज चालाय़ ना केन। भूपतिर चित्तरञ्जन करिबार अभ्यास ए पर्यन्त चारुके कखनो करिते हय़ नाइ, भूपति ताहार काछे कोनो सेबा दाबि करे नाइ, कोनो सुख प्रार्थना करे नाइ, चारुके से सर्बतोभाबे निजेर प्रय़ोजनीय़ करिय़ा तोले नाइ; आज हठात् ताहार जीबनेर समस्त प्रय़ोजन चारुर निकट चाहिय़ा बसाते से कोथाओ किछु येन खुँजिय़ा पाइतेछे ना। भूपतिर की चाइ, की हइले से तृप्त हय़, ताहा चारु ठिकमत जाने ना एबं जानिलेओ ताहा चारुर पक्षे सहजे आय़त्तगम्य नहे।

भूपति यदि अल्पे अल्पे अग्रसर हइत तबे चारुर पक्षे हय़तो एत कठिन हइत ना। किन्तु हठात् एक रात्रे देउलिय़ा हइय़ा रिक्त भिक्षापात्र पातिय़ा बसाते से येन बिब्रत हइय़ाछे।

चारु कहिल, "आच्छा, मन्दाके आनिये़ नाओ, से थाकले तोमार देखाशुनोर अनेक सुबिधे हते पारबे।"

भूपति हासिय़ा कहिल, "आमि बड़ो नीरस लोक, चारुके किछुतेइ आमि सुखी करिते पारितेछि ना।'

एइ भाबिय़ा से साहित्य लइय़ा पड़िल। बन्धुरा कखनो बाड़ि आसिले बिस्मित हइय़ा देखित, भूपति टेनिसन, बाइरन, बङ्किमेर गल्प एइ समस्त लइय़ा आछे। भूपतिर एइ अकाल-काब्यानुराग देखिय़ा बन्धुबान्धबेरा अत्यन्त ठाट्टाबिद्रूप करिते लागिल। भूपति हासिय़ा कहिल, "भाइ, बाँशेर फुलओ धरे, किन्तु कखन धरे तार ठिक नेइ।"

एकदिन सन्ध्याबेलाय़ शोबार घरे बड़ो बाति ज्बालाइय़ा भूपति प्रथमे लज्जाय़ एकटु इतस्तत करिल; परे कहिल, "एकटा किछु पड़े शोनाब?"

चारु कहिल, "शोनाओ-ना।"

भूपति। की शोनाब।

चारु। तोमार या इच्छे।

भूपति चारुर अधिक आग्रह ना देखिय़ा एकटु दमिल। तबु साहस करिय़ा कहिल, "टेनिसन थेके एकटा किछु तर्जमा करे तोमाके शोनाइ।" चारु कहिल, "शोनाओ।" समस्तइ माटि हइल। संकोच ओ निरुत्साहे भूपतिर पड़ा बाधिय़ा याइतेलागिल, ठिकमत बांला प्रतिशब्द जोगाइल ना। चारुर शून्यदृष्टि देखिय़ा बोझा गेल, से मन दितेछे ना। सेइ दीपालोकित छोटो घरटि, सेइ सन्ध्याबेलाकार निभृत अबकाशटुकु तेमन करिय़ा भरिय़ा उठिल ना।

भूपति आरो दुइ-एकबार एइ भ्रम करिय़ा अबशेषे स्त्रीर सहित साहित्य-चर्चार चेष्टा परित्याग करिल।

पञ्चदश परिच्छेद

येमन गुरुतर आघाते स्नाय़ु अबश हइय़ा याय़ एबं प्रथमटा बेदना टेर पाओय़ा याय़ ना, सेइरूप बिच्छेदेर आरम्भकाले अमलेर अभाब चारु भालो करिय़ा येन उपलब्धि करिते पारे नाइ।

अबशेषे यतइ दिन याइते लागिल ततइ अमलेर अभाबे सांसारिक शून्यतार परिमाण क्रमागतइ येन बाड़िते लागिल। एइ भीषण आबिष्कारे चारु हतबुद्धि हइया गेछे। निकुञ्जबन हइते बाहिर हइया से हठात् ए कोन्मरुभूमिर मध्ये आसिया पड़ियाछे-- दिनेर पर दिन याइतेछे, मरुप्रान्तर क्रमागतइ बाड़िया चलियाछे। ए मरुभूमिर कथा से किछुइ जानित ना।

घुम थेके उठियाइ हठात् बुकेर मध्ये धक्करिया उठे-- मने पड़े, अमल नाइ। सकाले यखन से बारान्दाय़ पान साजिते बसे, क्षणे क्षणे केबलइ मने हय़, अमल पश्चात् हइते आसिबे ना। एक-एकसमय़ अन्यमनस्क हइया बेशि पान साजिया फेले, सहसा मने पड़े, बेशि पान खाइबार लोक नाइ। यखनइ भाँड़ारघरे पदार्पण करे मने उदय़ हय़, अमलेर जन्य जलखाबार दिते हइबे ना। मनेर अधैर्य अन्तःपुरेर सीमान्ते आसिया ताहाके स्मरण कराइया देय़, अमल कलेज हइते आसिबे ना। कोनो एकटा नूतन बइ, नूतन लेखा, नूतन खबर, नूतन कौतुक प्रत्याशा करिबार नाइ; काहारो जन्य कोनो सेलाइ करिबार, कोनो लेखा लिखिबार, कोनो शौखिन जिनिस किनिया राखिबार नाइ।

निजेर असह्य कष्ट ओ चाञ्चल्ये चारु निजे बिस्मित। मनोबेदनार अबिश्राम पीड़ने ताहार भय़ हइल। निजे केबलइ प्रश्न करिते लागिल, "केन। एत कष्ट केन हइतेछे। अमल आमार एतइ की ये, ताहार जन्य एत दुःख भोग करिब। आमार की हइल, एतदिन परे आमार ए की हइल। दासी चाकर रास्तार मुटेमजुरगुलाओ निश्चिन्त हइया फिरितेछे, आमार एमन हइल केन। भगबान हरि, आमाके एमन बिपदे केन फेलिले।'

केबलइ प्रश्न करे एबं आश्चर्य हय़, किन्तु दुःखेर कोनो उपशम हय़ ना। अमलेर स्मृतिते ताहार अन्तर-बाहिर एमनि परिब्याप्त ये, कोथाओ से पालाइबार स्थान पाय़ ना।

भूपति कोथाय़ अमलेर स्मृतिर आक्रमण हइते ताहाके रक्षा करिबे, ताहा ना करिया सेइ बिच्छेदब्यथित स्नेहशील मूढ़ केबलइ अमलेर कथाइ मने कराइया देय़।

अबशेषे चारु एकेबारे हाल छाड़िया दिल-- निजेर सङ्गे युद्ध कराय़ क्षान्त हइल; हार मानिया निजेर अबस्थाके अबिरोधे ग्रहण करिल। अमलेर स्बृतिके यत्नपूर्बक हृदय़ेर मध्ये प्रतिष्ठित करिया लइल।

क्रमे एमनि हइया उठिल, एकाग्रचित्ते अमलेर ध्यान ताहार गोपन गर्बेर बिषय़ हइल-- सेइ स्मृतिइ येन ताहार जीबनेर श्रेष्ठ गौरब।

गृहकार्येर अबकाशे एकटा समय़ से निर्दिष्ट करिया लइल। सेइ समय़ निर्जने गृहद्वार रुद्ध करिया तन्न तन्न करिया अमलेर सहित ताहार निज जीबनेर प्रत्येक घटना चिन्ता करित। उपुड़

हइया बालिशेर उपर मुख राखिया बारबार करिया बलित, "अमल, अमल, अमल!" समुद्र पार हइया येन शब्द आसित, "बोठान, की बोठान।" चारु सिक्त चक्षु मुद्रित करिया बलित, "अमल, तुमि राग करिया चलिया गेले केन। आमि तो कोनो दोष करि नाइ। तुमि यदि भालोमुखे बिदाय लइया याइते, ताहा हइले बोध हय आमि एत दुःख पाइताम ना।" अमल सम्मुखे थाकिले येमन कथा हइत चारु ठिक तेमनि करिया कथागुलि उच्चारण करिया बलित, "अमल, तोमाके आमि एकदिनओ भुलि नाइ। एकदिनओ ना, एकदण्डओ ना। आमार जीबनेर श्रेष्ठ पदार्थ समस्त तुमिइ फुटाइयाछ, आमार जीबनेर सारभाग दिया प्रतिदिन तोमार पूजा करिब।"

एइरूपे चारु ताहार समस्त घरकन्ना ताहार समस्त कर्तब्येर अन्तःस्तरेर तलदेशे सुड़ङ्ग खनन करिया सेइ निरालोक निस्तब्ध अन्धकारेर मध्ये अश्रुमालासज्जित एकटि गोपन शोकेर मन्दिर निर्माण करिया राखिल। सेखाने ताहार स्बामी बा पृथिबीर आरकाहारो कोनो अधिकार रहिल ना। सेइ स्थानटुकु येमन गोपनतम, तेमनि गभीरतम, तेमनि प्रियतम। ताहारइ द्वारे से संसारेर समस्त छद्मबेश परित्याग करिया निजेर अनाबृत आत्मस्बरूपे प्रबेश करे एबं सेखान हइते बाहिर हइया मुखोशखाना आबार मुखे दिया पृथिबीर हास्यालाप ओ क्रियाकर्मेर रङ्गभूमिर मध्ये आसिया उपस्थित हय।

बैशाख-अग्रहायण १३०८